# चतुर्थ अध्याय

# 'सप्तकाण्ड रामायण' में रामभक्ति

## 4.1 प्रस्तावना

जैसा कि मैंने 'रामचरितमानस' में रामभक्ति विषय की विवेचना करते हुए भक्ति की व्याख्या की है। वहाँ पर भक्ति से तात्पर्य 'विशेष प्रेम' या 'श्रद्धा' को कहा गया है। जयदयाल गोयंदका 'नवधा भक्ति' में भक्ति की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि 'वास्तव में भगवान में अनन्य प्रेम का होना ही भक्ति है।(गोयंदका 2019:06)

डॉ. पी. जयरामन ने अपनी पुस्तक 'भक्ति के आयाम' में भक्ति की व्याख्या करते हुए कहा है कि भक्ति द्वारा ही जीव भगवत प्राप्ति करता है।(जयरामन 2003:412)

अपने आराध्य के प्रति विशेष प्रेम को प्रकट करने के लिए हम उनकी सेवा करते हैं। इसी सेवा भाव की नौ विधियों की व्याख्या समस्त शास्त्र, उपनिषद तथा पुराणों आदि ग्रन्थों में तथा रामचन्द्र शुक्ल आदि महान आलोचकों की आलोचनाओं में भी देखने को मिलता है। यह भी प्रमाणित होता है कि इन नौ विधियों के माध्यम से भगवान की प्रेममयी सेवा कर भक्त आध्यात्मिक उन्नति कर परम गति को प्राप्त कर लेता है। ये विधियाँ नौ प्रकार की मानी गयी हैं। यथा- श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन। 'सप्तकाण्ड रामायण' में रामभक्ति का विवेचन करने हेतु भी इन्हीं विधियों के आधार पर विवेचना यहाँ करना आवश्यक है। अतः मैं यहाँ इन्ही नौ विधियों के आधार पर रामभक्ति की विवेचना तथा उसकी सार्थकता की व्याख्या करूँगा।

## 4.2 'सप्तकांड रामायण' में रामभक्ति की विषद विवेचना

श्रीमंत शंकरदेव के समय से लगभग सौ वर्ष पहले के असमीया वैष्णव साहित्य के मुख्य कवियों में प्रधान थे माधव कंदली । माधव कंदली को असमीया वैष्णव कवियों में उज्ज्वल नक्षत्र मानते हुए लेखिका डॉ॰ इन्दिरा गोस्वामी ने अपने प्रसिद्ध पुस्तक 'रामायण: गंगार परा ब्रह्मपुत्रलोई' में लिखा है-

> कोचबिहार साम्राज्यर रजा महाराज नरनारायणर समसामयिक महान संत कबि शंकरदेवर समयर प्रायः एश बसर आगर वैष्णव असमीया साहित्यर मूल कबिसकलर माजर आटाईतकोई उज्जवल नक्षत्र आसिल माधव कंदली ।(गोस्वामी 2015:56)

भक्ति के प्रसार तथा प्रचार में वैष्णव कवियों या भक्तों का योगदान सर्वोच्च है । वैष्णव कवियों ने राम हो या कृष्ण या विष्णु की भक्ति को जीवन का प्रधान लक्ष्य मानकर उसका प्रचार-प्रसार कर अपने जीवन को धन्य किया तथा भौतिक कल्मष से ग्रस्त समाज का उद्धार भी किया । यही कारण है कि आज सैकड़ो वर्षों बाद भी भक्ति की धारा निरंतर भक्तों तथा समाज के हृदय में व्याप्त है । यही धारा वास्तविक तौर पर समाज का पोषण कर उसे मुक्त करके उसका उद्धार कर रही है ।

डॉ॰ इन्दिरा गोस्वामी के अनुसार माधव कंदली ने अपने रामायण में वाल्मीकि रामायण के गौड़ीय संस्करण के संस्कृत भाषा का ही अनुकरण किया था । डॉ॰ गोस्वामी के शब्दों में-

> माधव कन्दलिये तेऊँ रचना करा असमीया रामायनत बाल्मीकिर रामायनर गौड़ीय संस्करणर संस्कृत भाषा अनुकरण करिसिल ।(गोस्वामी 2015:58)

अनंत कंदली तथा अनेकानेक विद्वानों ने माधव कंदली रामायण की आलोचना करते हुए लिखा है कि यहाँ पर राम का चरित्र अतिमानवीय अंकित किया गया है । माधव कंदली के रामायण में राम जहाँ साधारण

मनुष्य की भाँति रोते–बिलखते हैं वहीं लक्ष्मण तथा सीता में भी साधारण मनुष्य की भाँति वार्ता कही गयी है। परंतु मेरे विचार में ऐसा शत प्रतिशत सत्य नहीं है। राम का चरित्र यहाँ पर मनुष्य अवतारी परमात्मा के रूप में ही दिखाया गया है। कंदली के अनुसार राम एक मनुष्य रूप में अवतार लिए साक्षात नारायण हैं। अपने गुण समूहों को महाभारत के कृष्ण की भाँति भले ही विराट रूप दिखाकर प्रमाणित नहीं करते। परंतु शिवधनुष भंग कर परशुराम को परास्त करना तथा रावण  समेत समस्त राक्षश-कुल का संहार कर पृथ्वी को राक्षस विहिन कर देना और सभी पत्रों में राम के प्रति श्रद्धा, प्रेम, भक्ति, समर्पण आदि सारी भावनाओं का होना और इन्द्र ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा राम से निवेदन की याचना कर राम की स्तुति करना इस काव्य में यही प्रमाणित करता है कि राम स्वयं परम ब्रहम हैं।

डॉ॰ इन्दिरा गोस्वामी इस विषय पर विचार व्यक्त करते हुए लिखती हैं-

> तदुपरि, कंदलीर रामायानत भगवान विष्णुर एक उल्लेखयोग्य भूमिका आसे । एईखन रामायनर बहुतों चरित्र भगवान विष्णुर गभीर भक्त । एठाईत आसे कौशल्याई आनकि उल्लेख करिसे जे भगवान विष्णुर प्रति थका गभीर भक्तिर बाबेहे तेऊँ रामर दरे एक पुत्र सन्तान लाभ करिसे ।(गोस्वामी 2015:65)

डॉ॰ इन्दिरा गोस्वामी जी यहाँ इस मत का खंडन करती हैं कि माधव कन्दलि के रामायण में शंकरदेव तथा माधव देव ने बीच-बीच में नव-वैष्णव-भक्ति वाद के प्रचार के लिए विष्णु भक्ति मूलक पदों को जोड़ा है। हाँ कुछ हद तक जोड़ा गया होगा यह हो सकता है परंतु सम्पूर्ण रामायण में जोड़ा जाना संभव नहीं है। इसी बात को प्रमाणित करते हुए डॉ॰ गोस्वामी आगे लिखती हैं-

> एईटो सत्य जे रामक विष्णु अवतार हीसाबे देखुउवाटोउ नववैष्णववादर प्रचार आरू प्रसारर बाबे श्री शंकरदेव आरू श्री माधवदेव मूल रामयखनत नतुनकोई सन्निविष्ट करिसिल । किन्तु कंदलीर रामायनतों निर्दिष्ट कीसुमान कथांश आसे, जिबोरत रामक बिष्णुर अवताररुपे इंगित दिया होईसे, किन्तु एईबोर खूब संभवतः पिसर समयर सन्निविष्टकरण नहय । आनकि ऐनेकुवा केतबोर ऊपमा आसे जिबिलाके रामक बिष्णुर सोईते आरू सीताक लक्ष्मीर सोईते तुलना करिसे । एइबिलाक एईकारने उल्लखयोग्य जे ऐईबिलाक मूल सृष्टि जेन लागे, शंकरदेव बा माधवदेवे पिसत सन्निविष्ट करा येन नालागे ।(गोस्वामी 2015:65)

यहाँ और एक बात उल्लेख करने योग्य है कि मध्यकाल में सम्पूर्ण भारत में जिस प्रकार से विष्णु, राम या कृष्ण भक्ति की या वैष्णव-भक्ति की परम्परा का प्रादुर्भाव तथा उसका परवर्ती साहित्य तथा कवियों पर प्रभाव पड़ा, यह संभव है कि असम के माधव कंदली भी उससे अछूते न हों । इनमें भी प्रत्यक्ष ना सही परोक्ष रूप से यह प्रभाव परिलक्षित अवश्य होता है । जिस प्रकार से तुलसीदास पर रामानन्द का प्रभाव पड़ा प्रतीत होता है । उसी प्रकार रमानन्द का प्रभाव और अनेकों कवियों पर भी अवश्य पड़ा होने का अनुमान भी कोरी कल्पना नहीं हो सकती । डॉ॰ इन्दिरा गोस्वामी ने इसी बात की ओर संकेत करते हुए लिखा है-

> एईदरे आमी धारना करिव पारों जे कन्दि्लर रचनार उपरत रामानन्दर परोक्षभावे हलेउ किसू प्रभाव आसे ।(गोस्वामी 2015:66)

मेरे इस शोध विषय के अध्ययन का परम उद्देश्य 'सप्तकाण्ड रामायण' में रामभक्ति का अध्ययन करना है । इस 'सप्तकांड रामायण' का संकलन श्रीमंत शंकरदेव ने तथा माधवदेव ने आदि और उतरकाण्ड जोड़कर पूर्ण किया है । अतः इस काव्य में माधव कंदली या शंकर-माधव की वैष्णव भक्ति सम्मिश्रण विषय को छोडकर अगर

सम्पूर्ण काव्य में रामभक्ति विषय पर विचार करे तो यही उत्तम होगा। क्योंकि रामभक्ति ही मूल है। इस महान ग्रंथ का आधार तथा उदेश्य भी राम भक्ति की महिमा का प्रसार करना ही है। अतः सभी मतवादों का त्याग कर 'सप्तकाण्ड रामायण' में रामभक्ति विषय पर विवेचना करने का कार्य करना उत्तम होगा।

आदिकाण्ड के प्रारंभ में ही इस कलियुग की विभिषिका तथा हरिनाम की महिमा का गुणगान माधव देव ने अनेकों बार किया है। कवि के अनुसार इस घोर कलिकाल में हरि नाम ही परम तत्व है। इसी हरि नाम में आसक्ति कलिकाल की विभीषिका से मुक्ति का परम सुंदर साधन है। राम कथा में अनुराग ही भक्ति का एक मात्र उपाय है। अतः माधवदेव रामनाम की महिमा का गुणगान करते हुए लिखते हैं-

मोर पद जानि दोष करा परिहार।

लैयो राम गुणमय महारत्न सार।।

तेवेसे कलित होइबा कृतार्थ संप्रति।

रामकथा शुनि अनायासे पाइबा गति।।

(दत्तबरुवा, चौदहवाँ संस्करण 2016:01)

इसी के आगे ब्रह्मा नारद के साथ स्वयं वाल्मीकि के घर प्रकट होकर राम को नारायण का अवतार घोषित करते हुए राम की कथा का सृजन करने का आदेश देते हैं-

दशरथ नृपतिर गृहे आयोध्यात।

श्रीराम स्वरूपे हरि जन्मिला साक्षात।।(दत्तबरुवा 2016:02)

राम के ईश्वरत्व का प्रमाण पाकर जब विश्वामित्र राम लक्ष्मण को यज्ञ की रक्षा करने हेतु वन में ले आते हैं तभी राम ताड़का तथा सुबाहु का वध कर ऋषियों को अभय दान देते हैं। समस्त ऋषिगण राम की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि जिनका नाम लेने से ही सम्पूर्ण धर्म–कर्म के फल मिल जाते हैं उन्हीं भगवान राम ने आज उनके यज्ञ की रक्षा की,-

यार नामे सांग होवे धर्म्म कर्म्म यत।

हेन तुमि भैला आसि सहाय यज्ञत ।। (दत्तबरुवा 2016:63)

राम के प्रति भक्ति केवल ऋषि मुनियों में ही नहीं बल्कि सभी पात्रों के हृदय में दृढ़ रूप से बसी है। जब कैकेयी द्वारा राम को चौदह वर्ष का वनवास प्राप्त होता है तब लक्ष्मण भी राम के प्रति अपनी भक्ति तथा सेवा भाव को प्रकट कर वन के लिए तैयार हो जाते हैं। जब लक्ष्मण माता सुमित्रा से आज्ञा लेने हेतु जाते हैं तभी आदर्श भक्ति-भावना का परिचय देते हुए सुमित्रा राम के साथ वन जाने के लिए लक्ष्मण को कहती हैं। अपने पुत्र के हृदय में राम के प्रति भक्ति देख सुमित्रा धन्य होकर आशीर्वाद देती हैं। इसी प्रसंग को अयोध्याकाण्ड में माधव कंदली ने इतनी सुन्दरता से चित्रित किया है-

साफल जीवन मोर कल्याण साधिलो।

कत जन्म पुण्ये मई हेन पूत्र पाईलौ।

उद्धारिलि बंशक साम्फल उतपति।

ज्येष्ठ भाइत भैल तोर ईमत भकति ।।

(दत्तबरुवा 2016:132)

केवल लक्ष्मण, सुमित्रा या सीता के ही हृदय में राम की भक्ति नहीं थी। राम के प्रति भक्ति एवं प्रेम तो समस्त प्रजा जनों के भीतर भरी हुई है। राम का बिछोह पाकर समस्त प्रजा जैसे जीना ही भूल गई। अपने समस्त कार्यो का त्याग कर केवल राम का ही चिंतन करते प्रजा रोती बिलखती रहती थी। माधव कंदली ने अयोध्याकाण्ड में ही इस मार्मिक प्रसंग का सुन्दर उल्लेख किया है-

एहिमते प्रजाये रामक करे मर्म्म।

तेजिल समस्ते लोके यार येन कर्म्म।

देवरीये देव पूजा करिले बिच्छेद।

ब्राहमणसकले नपढ़य आरो बेद।

क्षत्रे एरिलेक अस्त्र शस्त्र कर्म्म धर्म्म।

वैश्ये एरिलेक कृषि बाणिज्यर कर्म्म।

शूद्रे एरिलेक सेवा विषादित लोक।

पूत्रे मातृ एरिले तेजिल मावे पोक।

सकले प्रजार भैल असूख आधृति।

छत्रिश जातिये तेजिलेक निज वृत्ति।

देशे देशे प्रजासबे कान्दे मन्यू करि।

सकले नगरी छानि शुनि हरि हरि ।।

(दत्तबरुवा 2016:136)

राम की भक्ति ही समस्त शास्त्र संपत्ति है । इसीलिए माधव कंदली राम की भक्ति करने की सलाह देते है। वे कहते हैं कि राम कथा सुनने पर जीव का उद्धार होता है । इसीलिए हरि का स्मरण करना चाहिए-

परम अमृत रामर चरित्र

शुना सामाजिक यत ।

असार संसार आर आशा एरी

करियो रति रामत ।।

रामर भकति एहिसे संपत्ति

समस्ते शास्त्र सम्मत ।

थिर मन करि बोला हरि हरि

लागोक जूई पापत ।।

(दत्तबरुवा 2016:139)

जयदयाल गोयंदका भक्ति की महिमा व्यक्त करते हुए लिखते हैं- "भक्ति एक ऐसा सुगम साधन है जिसके करने पर मनुष्य का आत्मोद्धार होता है ।"(गोयंदका 2019:05)

माधव देव आदिकाण्ड में राम की भक्ति भावना से ओत-प्रोत होकर राम का गुण-गान करते हुए कहते हैं कि राम ही त्रिभुवन के सर्वोच्च देव हैं। सभी योगेश्वर ध्यान में उन्हीं राम का चिंतन करते हैं। ब्रह्मा और शंकर भी जिनके दास हैं उन राम की महिमा का क्या कहना। अतः उनके गुण समूहों की वर्णना कोई नहीं कर सकता-

एक कोटि ब्रह्मा सम नूहिके मानत।

धानूर्गूणे सम नाहि ईतिनि लोकत।

आनो नाना गुण यत आछय रामत।

त्रिभुवन माजे कोने बर्णाइबे शकत।

अनन्त शकतिधर परम ईश्वर।

याहार किंकर हर ब्रह्मा पुरंदर।

याक योगेश्वरसबे चिंतन्त ध्यानत।

तेन्ते रामरुपे आसि भैलंत बेकत।।(दत्तबरुवा चौदहवाँ 2016:55)

माधव कंदली रामभक्ति को ही जीवन की परम सिद्धि मानते हैं। उनके अनुसार राम के चरण ही उद्धार का एक मात्र सुलभ साधन है। इसीलिए शरीर का मोह न कर राम में प्रीति होना ही सर्वश्रेष्ठ है। कवि कहते हैं कि इससे पहले कि यह मृत्यु मुखी शरीर कब साथ छोड़ दे, यही उचित है कि पहले ही राम की शरण ग्रहण कर लेना चाहिए-

घोर कलिकाल नाहि आत भाल

रामत बिने भकति ।

जीबा कतकाल तेजि आलजाल

रामपावे दिया मति ।।

परम अथिर मनुष्य शरीर

परे केतिक्षण जानि ।

जन्मर साफल हौक लोक डाकि

बोला राम राम बाणी ।।(दत्तबरुवा चौदहवाँ 2016:135)

जब राम दंडक वन में प्रवेश करते हैं । तब अत्रिमुनि के आश्रम में जाने पर मुनि बहुत प्रसन्न होते हैं । अत्रि मुनि एक परम रामभक्त ऋषि थे । उन्होंने राम को परम ब्रह्म अवतारी रूप में जान लिया था । इसी हेतु दर्शन देने पर अत्रि मुनि भगवान अपने जन्म को सफल समझकर राम की पुजा करते है । इसी प्रसंग को माधव कंदली ने अरण्य-काण्ड में बड़े ही रोचक ढंग से वर्णन किया है-

अत्रि बर हरिष देखिया राघवक ।

परम ईश्वर मोर आइला आश्रमक ।।

आजिसे जानिलो मई जन्म साफलिलो ।

ईश्वरर पाद पद्म साक्षाते देखिलो ।।

बिधिवते फूले जले पूजिया रामक ।

परम सादरे पूछिलन्त कुशलक ।।(दत्तबरुवा 2016:180)

वन में बिराध राक्षस जब राम लक्ष्मण और सीता के दर्शन करता है तभी वह समझ जाता है कि यह वही राम जो स्वयं परम ब्रहम हैं। जिन्होंने मनुष्य रूप में अवतार लिया है तथा इन्हीं के हाथों वध होकर मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है। अतः राक्षस बीराध मन में हर्षित होकर राम को उकसाता है ताकि वें उसका वध कर मुक्ति दे दें। राम के दर्शन कर वह अपनी भक्ति का वर्णन कुछ इन शब्दों में देता है-

हेन शुनि बिराधर परम हरिष।

एहेन्तेसे राम मन करि बिमरिष।

आन हाते मरो मोर पाप अन्त भैल।

एही मने गुणि खङ्ग तोलाईबाक लैल ।।(दत्तबरुवा 2016:183)

राम परम ईश्वर हैं। इस बात को मानव तो क्या बड़े-बड़े ज्ञानी, राक्षश भी जानते थे। राम की शक्ति का ज्ञान इन्हें था इसीलिए इन्होंने रावण को भी बहुत समझाया। माल्यवान रावण को समझता है। राम के चरणों में जाकर सीता को समर्पित करने कि बात कहता है। राम की ईश्वरीय शक्ति का आभास पाकर वह भक्ति भाव से राम की गुण राशि का वर्णन रावण के सम्मुख करता है। माल्यवान समझता हुआ कहता है कि राम-लक्ष्मण नारायण के अवतार हैं। अतः रावण समझ जाए-

श्रीराम लक्ष्मण नारायण अवतार।

सागरत सेतू बांधे शकति काहार ।।

तोक ठेंक देखाईलेक यिटो बालीराय।

सियो बीर परिला रामर शरघाय ।।(दत्तबरुवा 2016:341)

लंकाकाण्ड में रावण की युद्ध यात्रा का वर्णन करने के पश्चात माधव कंदली राम का गुणगान करते हुए राक्षश सहांरक श्रीराम को प्रणाम करते हैं। वे कहते है कि राम के चरणों को छोड़कर उनकी कोई गति नहीं है-

नमो नमो राम राक्षसर अंतकारी ।

देवर देवता आदि पूरुष मुरारि ।।

गति मोर नाहि बिने तोमार चरणे ।

बोला राम राम सभासदगणे ।।(दत्तबरुवा 2016:364)

सप्तकाण्ड रामायण में राम नाम को परम गुणकारी बताया गया है। हरि या राम के नाम से ही जीवन को परम आनन्द तथा परम गति प्राप्त हो सकता है। माधवदेव आदिकाण्ड में नाम की महिमा बताते हुए कहते हैं-

डाकि बोला हरि संसारक तरि

लभिबा परम सूख ।।(दत्तबरुवा 2016:17)

राम नाम इतना ही गुणकारी है कि महाजन लोग भी राम नाम को गुणकारी समझ अमृत से भी अधिक समझकर इस नाम रस को पीते हैं। अतः राम नाम से ही जगत का परम कल्याण होगा। माधव देव प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि उनके मुख में सदा राम नाम का कीर्तन विराजमान रहे-

नमो नमो नमो राम यार जश अनूपाम

जगतरे मंगल निश्चय ।

अमृततोधिक करि पिया आक कर्ण भरि

महाजने मोक्षको तेजय ।।

हेन तयू गुण नाम मोर मुखे अविश्राम

कीर्तन करोक प्रभू राम ।

एहि कृपा करा मोक यत समाजिक लोक

बोला राम तेजि आन काम ।।(दत्तबरुवा 2016:33)

उत्तरकाण्ड में श्रीमंत शंकरदेव भी राम नाम की महिमा तथा रामभक्ति ही उद्धार के प्रमुख साधन हैं इसी मत की व्याख्या करते हैं । शंकरदेव के अनुसार इस कली काल में राम नाम के समान अन्य कोई दूसरा परम धर्म नहीं है । हरि नाम लेने से संसार से तर जाते है । राम नाम इतनी प्रभावशाली है कि मनुष्य जब उनका नाम लेता है तब वह संसार सागर से पार उतर जाता है । अतः जो भी व्यक्ति नाम में आसक्ति नहीं रखता वह इस संसार सागर में डूब जाता है । इस कलियुग में राम नाम के सिवा अन्य कोई साधन नहीं हैं । अतः यहाँ पर श्रीमंत शंकरदेव राम नाम लेकर उद्धार प्राप्त करने की बात कहते हैं-

कलित परम धर्म्म नाहि राम नाम सम

आक नलै याय अधोगति ।।

परम पूरुष हरि यार नाम लैले तरि

तांक एरि आनकेसे भजे ।

येन अन्ध नाव एरि दुर्घोर संसारे परि

कोटि जनमक लागि मजे ।।

कलित लभिया जन्म नाम एरि आन धर्म्म

करि मरै यिटो मंदबुद्धि ।

बिधाता छलना करै आपुनि चितनि मरै

कोछते आछंत महौषधि ।।

परम बांधव नाम एरि करे आन काम

नूबूजिया शास्त्रर युगुति ।

जानी महासूखे थाकि राम राम बोला डाकि

तेवे पाईबा हातते मूकूति ।।(दत्तबरुवा 2016:490)

आगे इसी अध्याय में श्रीमंत शंकरदेव कहते हैं कि राम नाम सिंह के समान पाप रूपी हाथी के लिए काल स्वरूप है । शंकरदेव कहते हैं कि करोड़ो तीर्थ-स्थान में स्नान करने, जप-तप, दान तथा यज्ञ आदि करने पर भी राम नाम के करोड़ों भाग के बराबर भी नहीं है । राम नाम सुन लेने मात्र से उस व्यक्ति के पाप को अग्नी जला डालती है । राम नाम में इतनी ही शक्ति है कि नाम लेते ही चांडाल भी यज्ञ का पात्र बन जाता है । कवि के अनुसार चारों वेदों का सार राम-नाम है-

रामनाम मत्तसिंह शुनीया ताहार रिंग

पलाई पाप-हस्ती हुया भीत ।।

कोटि शत तीर्थस्नान तप जप यज्ञ दान

कोटि भाग ताक सम नूई ।

राम बोले एकजने तार धवनि शुने माने

सबारो पापत लागे जुई ।।

नाम सूमरने मात्र चंडाले यज्ञर पात्र

हुईबेक उचित किनो देखा ।

चारियो बेदर सार नामर आगत आर

आन पातकर कोन लेखा ।।

शुनियोक शास्त्रमर्म्म किंकरसकले धर्म्म

सबारे उपरि राजा नाम ।।(दत्तबरुवा 2016:500)

कथाकार उत्तरकाण्ड में लिखते हैं कि राम नाम एक महौषधि है । इसके समान और कोई नहीं । इस राम नाम में इतनी शक्ति है कि यह इतने पापों को हर सकता है कि उतना कोई पाप कर भी नहीं सकता । जिस प्रकार से अग्नि तृण को जला देती है, यह उसके लिए साधारण बात होती है ठीक उसी प्रकार राम नाम भी पापों कि तृण रूप में अपनी अग्नि से जला कर भस्म कर देती है-

रामनाम ईटो अमृत बिनाई

नहि नहि महौषधि ।।

यतेक पातेक संहरिबे पारे

रामर नामे संप्रति ।

ततेक पातेक करिबे पापीर

बापर नाहि शकति ।।

अगनित येन तृणे नोजोरय

पापरो तेहन्य नाम ।

इसि धर्म्म निज मूकूति बाणिज्य

जानि बोला राम राम ।।(दत्तबरुवा 2016:512)

## 4.3 भक्ति के साधन या विधियां

यहाँ हम भक्ति की उन नौ विधियों - श्रवणम्, कीर्तनम्, स्मरणम्, पादसेवनम्, अर्चनम्, वंदनम्, दास्यम्, सख्यम् और आत्म निवेदनम् की चर्चा करते हुए 'सप्तकाण्ड रामायण' की व्याख्या करेंगे । यथा-

### 4.3.1 श्रवण

'श्रवण' भक्ति की नौ महत्वपूर्ण विधियों में सर्वप्रमुख है । अगर एक भक्त भगवान के गुण समूहों शास्त्र, श्रुति, स्मृति, पुराण सभी में सुनने अथार्त श्रवण भक्ति को महत्वपूर्ण मानते हुए इसकी विषाद विवेचन की गयी है । संसार के जीतने भी भक्त हुए हैं सभी सुनने अर्थात श्रवण भक्ति को सहज तथा अति महत्वपूर्ण मानते आए है। 'श्रीचैतन्य चरितमृत' के मध्य लीला भाग में श्रवण-कीर्तन का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि भगवान के प्रति प्रेम सभी जीवों के हृदय में स्थित रहता है । जीव श्रवण-कीर्तन से ही हृदय शुद्ध हो कर भागवत प्रेम प्राप्ति कर पाता है-

नित्य-सिद्ध कृष्ण-प्रेम 'साध्य' कभु नय ।

श्रवणादि-शुद्ध-चित्ते करये उदय ॥

(गोस्वामी और प्रभुपाद, श्रीचैतन्य-चरितामृत- मध्य लीला-भाग-5 2013:161)

'सप्तकाण्ड रामायण' के प्रत्येक अध्याय में ही नहीं बल्कि अनेकों स्थानों पर श्रवण भक्ति की महिमा गायी गयी है । इसके अनेकों उदाहरण यहाँ द्रष्टण्य हैं । आदिकाण्ड में माधव देव श्रवण की महिमा का गुणगान करते हुए एक स्थान पर कहते है कि सदैव रामायण का श्रवण करने से दुख मिट जाता है तथा मुक्ति मिलती है । यह 'राम' नाम या कथा अति गुणकारी है । इसीलिए ज़ोर से राम नाम कहना चाहिए-

शुना रामायण सभासद निरन्तर ।

लभिबा मूकूति दूख हैब उपशाम ।।

(गोस्वामी और प्रभुपाद, श्रीचैतन्य-चरितामृत- मध्य लीला-भाग-5 2013:89)

आदिकाण्ड में ही माधवदेव श्रवण कीर्तन आदि विधियों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए याचना करते हैं कि माधव को केवल राम जी के चरणों में शरण लेने की इच्छा है। राम के चरणों में आश्रय लेकर वे केवल राम का गुण श्रवण और कीर्तन करना चाहते हैं। माधव देव कहते हैं कि राम के गुण तथा आचरण को वो ही जान सकता है जो प्रभु की सेवा मुक्ति-लाभ का त्याग कर निस्वार्थ भाव से करता है। ब्रह्मा भी प्रभु के कार्यों का पार नहीं पा पाते। फिर कोई और क्या समझ पावे। राम को कहते हैं कि वे अनादि अनंत हैं तथा नित्य निरंजन हैं। काल तथा माया भी जिनके दास हैं वे मुक्तिदायक भगवान स्वयं वे ही हैं। सुख-दुख के दाता, दीनों-दरिद्रों के वत्सल कल्याणकारी राम ही हैं। वे ही सनातन तथा सभी कारणों के कारण भी हैं। अतः ऐसे ही प्रभु श्रीराम की कथा का श्रवण-कीर्तन माधव देव करते रहने की याचना करते हैं-

केवले तोमार पावे पशिया शरण।

तयू गुण नाम करे श्रवण कीर्तन।।

सेहिसे महन्ते जाने तयू व्यवहार।

मोक्षको एरिया भजे चरण तोमार।।

कोन बेला कोन रुपे करा कोन कर्म्म।

ब्रम्हये बुजिबे नपारन्त तार मर्म्म।।

आन कोने बुजिबेक तोमार लीलाक।

बेदे नपारन्त कहि सीमा करिबाक।।

नित्य निरंजन तूमि अनादि अनन्त।

कालमायादिरो तूमि प्रभू भगवन्त ।।

अनन्त विभूतिपति मुकुतिदायक।

बेदबिधायक एक जगतनायक ।।

सूख-दूखदाता दीन दरिद्रवत्सल ।

तुमिसे समस्ते जगतरे सूमंगल ।।

निजानन्द लाभे पूर्ण सत्य सनातन ।

कारणरो कारण तुमिसे अकारण ।। (दत्तबरुवा 2016:40)

केवल एक स्थान पर ही नहीं सैकड़ों स्थानों पर श्रवण की महिमा का गुणगान है । उनकी तो बस एक ही इच्छा है कि राम का कीर्तन श्रवण करते रहें । इसीलिए पुकार कर लोगों को राम नाम का कीर्तन श्रवण करने की सीख देते हैं । आदिकाण्ड के अन्तिम छंद से एक उदाहरण द्रष्टण्य है-

श्रवण कीर्तन बिने प्रभूराम

नाहि मोर आन काम ।

सामाजिक लोक सदगति हौक

डाकी बोला राम राम ।। (दत्तबरुवा 2016:101)

श्री जयदयाल गोयंदका अपनी पुस्तक 'नवधा भक्ति' में श्रवण भक्ति की महिमा की व्याख्या करते हुए कहते हैं- 'अपना सारा जीवन महापुरुषों के संग में रहते हुए भगवान के नाम, गुण, रूप आदि कथाओं का निरंतर श्रवण श्रवण करना चाहिए और अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए ।(गोयंदका 2019:14)

अरण्यकाण्ड में भी माधव कंदली ने श्रवण भक्ति की महिमा गायी है । वे कहते हैं कि सभी सामाजिक राम का चरित्र सुनें । स्वयं ईश्वर राम रूप में अवतार ले वन में भ्रमण कर रहे हैं । बड़े-बड़े योगी भी जिनकी चरण धूलि प्राप्त करने के लिए तरसते हैं, वे ही भगवान आज वन में घूम रहे । राम समभावी हैं । भक्त का शत्रु उनका शत्रु तथा भक्त का मित्र उनका मित्र है । प्रभु ऐसे स्वभाव वाले है कि शिष्ट जनों का उद्धार तथा दुष्ट जनों का संहार करते हैं । वे ही भगवान आज विपत्तियों में पड़कर यही शिक्षा दे रहे हैं कि यह संसार दुख का सागर है । प्रभु के गुण को समझकर उनके चरणों में चित्त को लगाकर राम-राम पुकार कर उनका गुण श्रवण करना चाहिए । अतः श्रवण भक्ति की महिमा बखान कर माधव कंदली कहते हैं-

परम पवित्र रामर चरित्र

शुना समाजिक सुखे ।

जगत तारण हेतू बने बन

भ्रमन्त ईश्वर दूखे ।।

याहार चरण धूलाक नपान्त

महा महा योगीजने ।

भकतर पदे हेनय ईश्वरे

फूरन्त कंटकबने ।।

यिटो महेश्वर समस्ते जीवर

आत्मा अंतर्यामी सम ।

भकत जनर शत्रु मित्र हेतू

ताहाड्क देखि विषम ।।

भकतर शत्रु भैल तान शत्रु

भकतर मित्रे मित्र ।

परम ईश्वर देवक देखियो

चरित्र केन बिचित्र ।।

शान्तक तारन्त दूष्टक मारन्त

एहि बेला बिपदत ।

हेनय गुणक जानिया रामर

चरणत दिया चित्त ।।

समस्त धर्म्मर शिरत प्रकाश

करे यार गुण नाम ।

हेनय रामक चित्तत धरिया

डाकि बोला राम राम ।।(दत्तबरुवा 2016:187)

अरण्यकाण्ड में ही आगे जब शूर्पणखा की कथा तथा खर दूषण आदि राक्षसों के संहार की कथा आती है, तभी कथा के अन्त में पुनः कवि माधव कंदली राम कथा के श्रवण के गुणों का बाखान कर श्रवण भक्ति से जीवन सफल करने की बात बताते हैं। इस घोर कलिकाल में उद्धार पाने का एक साधन है राम कथा का श्रवण तथा राम नाम का कीर्तन करना-

शुना रामायन हौक जन्मर साफल ।

कलिमल गुचि महा मिलिबे मङ्गल ।।

घोर संसारक तेवे तरिबाहा सूखे ।

पालाउक पातक राम राम बोला मूखे ।।(दत्तबरुवा 2016:194)

कुछ ही क्षण पश्चात अरण्यकाण्ड में ही कवि माधव कंदली राम कथा श्रवण के सुख की बात पुनः कहते हैं। कवि माधव कंदली कहते हैं कि राम का चरित्र सुनो। इससे सारे पाप नष्ट हो जाएगे तथा गति मिलेगी-

शुनियोक सभासद ।

रामर चरित्र पद ।।

पापर साक्षाते यम ।

शुनियोक मनोरम ।।

इसे धर्म अनुपाम ।

जानि शूना अविश्राम ।।

पोरोक पापर दाम ।

डाकि बोला राम राम ।।(दत्तबरुवा 2016:196)

इसी अध्याय के आगे एक स्थान पर पुनः राम कथा श्रवण करने की बात कहते है और माधव कंदली बताते हैं कि यह मनुष्य शरीर बड़े भाग्य से मिला है । ब्रह्मा भी इस नर शरीर की कामना करते हैं । अतः इसे प्राप्त करने पर भी अगर राम कथा का श्रवण नहीं किया तथा यदि राम की भक्ति नहीं की, जो कि करोड़ो पापों को नाश करने वाली है तो सब व्यर्थ है । अतः सदा राम-राम कहना चाहिए तथा रामकथा का श्रवण करना चाहिए-

रामर चरित्र शुनियोक सबे नरे ।

नामेसे तरिबे घोर संसार सागरे ।।

राम हेन नाम शुनीबाक मनोरम ।

कलिर पापर येन कालान्तक यम ।।

ब्रहमार बाञ्छनि नरतनू आछा पाई ।

जानिया सत्वरे फूरा रामनाम गाई ।।

संसारर सूख ईसे उपशाम करे ।

जानि राम राम घुषियोक निरन्तरे ।।(दत्तबरुवा 2016:204)

यह राम नाम तथा राम कथा इतना पवित्र तथा शुभ फल दायक है कि इसके श्रवण मात्र से ही इस घोर कलियुग में कलि के महा प्रभाव से यह मुक्ति दिलाने वाला है । नाम तथा कथा-श्रवण इतना गुणकारी है कि यम के हाथों भी बचाने वाला है यह । अतः समस्त बंधनों से मुक्ति के लिए हरि कथा श्रवण एक परम गुणकारी औषधि के समान है। माधव कंदली इन्हीं पंक्तियों को कुछ इन सुंदर शब्दों मे काव्यबद्ध करते हैं-

रामर चरित्र परम अमृत

शुना सभासद जन ।

निश्चये जानिबा ईसे महाधर्म्म

कलिमल करे छन ।।

पुण्यक संचियों यमक बंचियों

संसार करिमोचन ।

एरी आन काम बोला राम राम

घुषियोक घने घने ।।(दत्तबरुवा 2016:208)

अरण्यकाण्ड में सीता हरण की कथा कहते-कहते अन्त में कवि माधव कंदली रामकथा श्रवण के फल तथा गुण का वर्णन करते हुए कहते हैं कि राम का अनुपम चरित्र सुनकर कौतुहल होता है । कवि कहते है कि

श्रवण भक्ति पवित्र है तथा यही अज्ञानता से मुक्ति दिलाती है । अतः श्रवण भक्ति का परिचय यहाँ भी मिलता है-

परम अमृत रामर चरित्र

शुनिबाके कौतूहल ।

शुनियों सकल परम मङ्गल

धर्म्म ईसे सुनिम्मर्ल ।।

खाया दाया सूखे बसिया शुनंते

पूरे मनोरथ काम ।

अविद्यार हाथ एराईबा साक्षात

डाकि बोला राम राम ।।(दत्तबरुवा 2016:226)

किष्किंध्या काण्ड में कविराज माधव कंदली पुनः कथा के प्रांरभ में ही राम कथा श्रवण का सुन्दर गुणगान करते हुए कहते हैं कि जो भी रामायण का स्मरण कर ले उसके पाप रूपी मृग का सिंह रूपी नाम श्रवण के भय से पलायन हो जाता है । कविराज शिरोमणि कहते हैं कि राम कथा श्रवण बिजली की कौंध की तरह अस्थिर है । राम कथा या नाम के स्मरण मात्र से करोड़ो पुरुषों का उद्धार संभव हो जाता है । अतः कविराज माधव कंदली यही आग्रह करते हैं कि निरन्तर राम चरित्र का श्रवण करना चाहिए । यही समस्त ब्रह्माण्ड का उच्च तथा मुख्यतम धर्म भी है । इसके स्मरण मात्र से संसार से तर जाते हैं ।

सुन्दरकाण्ड के अन्त में भी कविराज माधव कंदली ने महर्षि वाल्मीकि की प्रशंसा करते हुए उनके रामायण को अमृत समान बताया है। इसके पश्चात पुनः श्रवण भक्ति के महत्व को प्रतिपादित करते हुए मानव कल्याण साधन में अन्यतम श्रवण भक्ति का गुणगान किया है। कविराज माधव कंदली कहते हैं कि प्रभु राम के चरणों के अलावा इस कलि काल में और कोई गति नहीं है। सुन्दरकाण्ड की कथा कहते हुए कविराज कंदली पुण्यकथा के श्रवण करने की महत्ता को प्रतिपादित करते हैं। कविराज माधव कंदली इस प्रकार से श्रवण भक्ति की महिमा को उजागर करते हुए लिखते हैं-

माधव कन्दलि बोले श्रीराम जय जय

रघुनाथ करियों उद्धार ।।

बाल्मीकि ये महाऋषि रामायण प्रकाशिल

संसारत स्रजिल अमृत।

आक शुनी नरलोक कलित सदगति होक

आक शुनी होवे कृतकृत्य ।।

माधव कन्दलि बिप्रे ताहाने चरण स्मरि

करिलन्त श्लोकक उद्धार।

रामर चरण बिना आन गति नाहि हेरा

जानिबाहा मने करि सार ।।

थाकिलन्त रामदेवे सुवेलत प्रवेशिया

समदले वितोपन थाने ।

माधव कन्दलि भणे कौतुके सुंदराकाण्ड

समापति भैला एहिमाने ।।

शुनियोक सभासद मधूर कोमल पद

पुण्यकथा रामर चरित्र ।

यमपथ निवारण कलिमल संहारण

महारस श्रवणे चरित्र ।।

भाव भय बिनाशन महा मोक्ष प्रकरण

समस्त धर्म्मरे ईसे सार ।

जानी शुना यत्न करि डाकी बोला हरि हरि

तेवे सूखे तरिबा संसार ।।(दत्तबरुवा 2016:330)

लंकाकांड के प्रांरभ में भी राम रावण की युद्ध की महान गाथा का वर्णन करते हुए महाकवि माधव कंदली पुनः श्रवण की अनिवार्यता तथा अपने आराध्य भगवान राम को नमस्कार कर कथा को प्रकाशित करते हैं । माधव कंदली कहते हैं कि राम ही पूर्णकाम तथा अवतारी हैं । नर रूप में लक्ष्मण संग अवतार ले अपने यश को प्रकाशित कर सम्पूर्ण धरा का भार उतारा । कविराज कहते हैं कि राम कथा यम पुर जाने से रक्षा करती है । अतः रामायण का श्रवण करना चाहिए । श्रवण भक्ति की महिमा का प्रकाश यहाँ उक्त छंद में मिलता है-

जय जय नमो राम तुमि पूरिपूर्णकाम

नररूपे भैला अवतार ।

लक्ष्मण सहिते आसि निज यश परकाशि

पृथिवीर खंडिलाहा भार ।।

माधव कंदली भणे शुनियोक सर्ब्बजने

रामायण कथा अनुपाम ।

बंचियों यमर पूर पाप हौक मसिमूर

निरंतरे बोला राम राम ।।(दत्तबरुवा 2016:336)

यह परम सत्य है कि श्रवण के बिना कीर्तन का अभ्यात नहीं हो सकता । शुद्ध श्रवण ही कीर्तन, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन आदि समस्त भावों तथा भक्ति में प्रेम के समावेश का मूल कारण है । केवल श्रवण भक्ति के माध्यम से ही एक भक्त शुद्ध भक्ति में अग्रसर हो सकता है तथा भगवान की निस्वार्थ सेवा कर सकता है । इसीलिए समस्त आचार्यों, शास्त्रों तथा पुराणों ने भी श्रवण को सर्वोच्च स्थान अथार्त प्रथम स्थान तथा प्रथम पड़ाव सिद्ध कर इसे शिर्ष आसन पर विराजित किया है ।

उत्तरकाण्ड में सम्पूर्ण कथा के अन्त में कथा के मूल उद्देश्य की व्याख्या करते हुए श्रीमंत शंकरदेव कहते हैं कि राम ने नर अवतार लेकर सहजता से भक्ति की महिमा का प्रकाश फैलाया है । शंकरदेव कहते हैं कि स्वर्ग-मर्त्य, पाताल तथा ब्रहम लोक में भी सभी राम कथा का श्रवण करते हैं । यह उनके लिए भी सर्वोच्च अमृत के घूँट

के समान है। यह पुण्यमय राम कथा समस्त संसार का कल्याण करने वाली है। जो कोई भी इसका श्रवण करता है या किसी भी व्यक्ति ने इस कथा का श्रवण किया या इसे कोई किसी को सुनाता है, तभी वह देवों के भी पूज्य बन जाता हैं तथा सप्तस्वर्गों से भी ऊपर उनका निवास हो जाता है। जो भी राम का यह पापनाशन चरित्र श्रवण करता है उसके पाप उसी क्षण हाहाकार करते हुए उसका त्याग कर देते हैं। प्रचंड अग्नि के समान हरि नाम श्रवण की महिमा को स्पष्ट करते हुए एक महान संदेश देते हैं-

स्वर्ग मर्त्य पातालत बिधातार समाजत

सिद्ध यत देवासूर लोक।

रामर चरित्रचय सम्यके अमृतमय

शुनी येन पिये ढोका ढोक ।।

जगतरे निस्तारण पुण्यकथा रामायण

आक शुनै भनै यिटो नरे।

पातेकत लागे जुई देवरो पूजनी हुई

बंचे सातो स्वर्गर उपरे ।।

रामर चरित्र ईटो शुनीबाक इच्छा यिटो

हाहाकार करे तार पापे।

एरि पलाइ तावक्षणे ऊजारे हरिर नामे

प्रचंड बहिनर येन तापे ।।

हेन जानि सभासद शुना रामायण पद

मूकूतिक यार अभिलाषा ।(दत्तबरुवा 2016:521)

इस प्रकार से सम्पूर्ण रामायण में सर्वत्र श्रवण भक्ति की महान महिमा का गुणगान हुआ है । श्रवण ही भक्ति का प्रथम और आवश्यक चरण है ।

### 4.3.2 कीर्तन

कीर्तन भगवद भक्ति की विधियों में अर्चन के पश्चात दूसरे नंबर पर है । वास्तव में यदि देखा जाये तो कीर्तन ही सम्पूर्ण भक्ति का आधार है । कीर्तन समस्त शास्त्रों का सार है । कीर्तन ही भक्ति का उद्देश्य तथा कीर्तन ही एक भक्त का लक्ष्य भी है । समस्त शास्त्रों-पुराणों आदि में कीर्तन की बड़ी भारी महिमा गायी गयी है । कीर्तन भक्त के जीवन को संतुलित कर उसका उद्धार करता है । कीर्तन से वाक शुद्धि, मन शुद्धि तथा आत्म शुद्धि की अवस्था प्राप्त कर भक्त भगवद धाम का अधिकार बन जाता है । भक्त का जीवन एक मात्र भजन कीर्तन से सदैव आनंदित रहता है । 'श्रीचैतन्य-चरितामृत' अन्त्य लीला में कहा गया है कि सम्मान की आशा किए बिना सबको सम्मान देते हुए सदैव भगवान के नाम का कीर्तन करना चाहिए तथा अपने हृदय में राधा-कृष्ण की सेवा करनी चाहिए,-

अमानी मानद हया कृष्ण-नाम सदा ल'बे ।

व्रजे राधा-कृष्ण-सेवा मानसे करिबे ॥

(गोस्वामी और प्रभुपाद, श्रीचैतन्य-चरितामृत- अन्त्य लीला-भाग-1 2013:652)

जयदयाल गोयंदका कीर्तन भक्ति की महिमा की व्याख्या करते हुए कहते हैं- "केवल कीर्तन-भक्ति से भी मनुष्य परमात्मा की कृपा से उसमें अनन्य प्रेम करके उसे प्राप्त कर सकता है ।"(गोयंदका 2019:16)

'सप्तकाण्ड रामायण' का प्रत्येक राम भक्त पात्र राम कथा का कीर्तन करता है । वह सदैव अपने आराध्य के कीर्तन को सुनने का अभिलाषी होकर आगन्तुक से राम कथा कीर्तन की याचना भी करता है । मैंने पूर्व के अध्यायों में विभीन्न विद्वानों तथा आचार्यों की युक्ति का उल्लेख किया है जिन्होंने कीर्तन की कितनी महिमा गायी है । आदिकाण्ड के प्रांरभ में ही कविवर श्री-श्री माधवदेव कथा के प्रांरभ में ही ऋष्यशृंग उपाख्यान के समय राम-कथा तथा नाम-किर्तन की महिमा का सुन्दर शब्दों में वर्णन करते हैं । कवि माधव देव कहते हैं कि राम का नाम सदा उनके मुख से कीर्तन के रूप में निकले । सारे समाज से माधव देव आग्रह करते हैं कि राम नाम का कीर्तन करें । यही परम धर्म है-

हेन तयू गुण नाम मोर मूखे अविश्राम

कीर्तन करोक प्रभू राम ।

एहि कृपा करा मोक यत समाजिक लोक

बोला राम तेजी आन काम ।।(दत्तबरुवा 2016:33)

आदिकाण्ड के अन्त में ही एक और स्थान पर माधव नाम कीर्तन की महिमा का बखान करते हैं । माधव देव समाज को यही सीख देते हैं कि पापमग्न होकर अगर मनुष्य अन्य धर्म की आशा करता है तो उसे कोई फल

नहीं मिलता । वरण उसे दुख ही प्राप्त होता है । चाहे जीतने भी दुराचारी कोई क्यों न हों ,सबका एक मात्र धर्म हरि नाम कीर्तन ही है । यह नाम लेने पर ही मनुष्य संसार सागर से पार हो सकता है । स्वयं ब्रह्मा भी जिस मनुष्य देह की तथा भक्ति की आशा करते नहीं थकते वही मनुष्य शरीर प्राप्त कर यदि हम कीर्तन ना करें तो हम आत्मघाती ही हैं । अतः कीर्तन ही जीवन की परम गति तथा एक मात्र साधन है-

पापत मगन हुया यिटोजन

आन धर्म्मे आशा करे ।

एको फल तात नाहिके मिछात

दूख पाया मात्र मरे ।।

तात परे आर नाहि दुराचार

तारो हरिनाम धर्म्म ।

नाम गुण लैले संसार तरय

जानिबा इसब मर्म्म ।।

ब्रह्मा मूनि याक बांछिया नपावे

पाया हेन कलेवर ।

हरिर कीर्तन नकरे यिजन

आत्मघाती सिटो नर ।।(दत्तबरुवा 2016:101)

अरण्यकाण्ड के अन्त में कविराज माधव कंदली राम का गुणगान करते हुए लिखते हैं कि ऐसे प्रभु राम जो दुर्वादल श्याम तथा अत्यंत मनोहर हैं। जिनका नाम कीर्तन सर्वोच्चि है तथा जिनका चरण कमल सभी श्रुति-रत्नों के शिर्ष मस्तक पर आसीन है, जो सुमंगल तथा सभी शास्त्रों का सार हैं उनको माधव कंदली नमस्कार करते हैं। ये परम ब्रह्म हरि स्वयं राम रूप में अवतार ले लीला कर धर्म का प्रचार कर रहे हैं। राम ही सभी धर्मों के गृह तथा शीतल स्वभाव वाले हैं यह राम कथा सभी महंतों के कर्णाभूषण हैं। अतः ऐसे राम प्रभु के नाम तथा गुण का कीर्तन करना चाहिए जिसके कीर्तन से महापापियों का भी उद्धार हो जाता है-

नमो नमोराम दुर्ब्बादल श्याम

तनु आति अनुपाम।

सर्ब्ब पुरुषार्थ शिरत प्रकाश

करे यार गुणनाम।

सर्ब्बश्रुति रत्न शिरत बिराज

याहार पदकमल।

सर्ब्ब धर्म सार यार यशराशि

मङ्गलरों सुमंगल ।।

हेनय परम ईश्वर आपुनि

राम रुपे अवतरि।

गृहस्थर यत धर्म्मक प्रकाश

करिलन्त महाहरि ।

धर्म्मवन्त संत शीतल स्वभाव

समस्ते गुण आलय ।

सर्ब्ब धर्म्ममय निज यशचय

प्रचारिला कृपामय ।।

महन्त सबर कर्णर भूषण

परम अमृतमय ।

ईहार श्रवण कीर्तने तरय

महा महा पापीचय ।।(दत्तबरुवा 2016:230)

सुन्दरकाण्ड में राम के परम भक्त तथा सेवक हनुमान की अनुपम लीला, समुद्र लंघन,लंका दहन इत्यादि का वर्णन करने के पश्चात कविराज माधव कंदली यह कहते हैं कि राम के परम स्नेही तथा राम चरणों की सदा सेवा करने वाले हनुमान ने किस प्रकार से रावण जैसे महान राक्षश के महल में भी तबाही मचा दी थी । राम भक्त हनुमान का गुणगान करते हुए कविराज माधव कंदली कहते हैं कि सदा राम के चरण-कमलों का भजन कर्णा चाहिए । सदा सत्संगति में रहकर मात्र श्रवण-कीर्तन भक्ति करना ही श्रेयकर है । मुख में सदा ही राम नाम का कीर्तन करते रहने से समस्त पापों से मुक्ति मिल जाएगी-

शुना रामायण सभासद लोक यत ।

रामर सेवार देखा परम महत्व ॥

त्रैलोक्य सम्पद यिटो राजा लङ्केश्वर ।

रामदूत हनुमन्त बनर बानर ।।

एकेश्वरे लङ्कात लगाईले खलखलि ।

रावणक चमक देखाईला महाबली ।।

श्रीरामर चरण सेवार देखा बल ।

जानि भजा राघवर चरण कमल ।।

परम यतने निते संतर सङ्गत ।

श्रवण कीर्तन मात्र करियो मनत ।।

एतेके संसार ताप तरिबाहा सूखे ।

पलाओक पातक राम राम बोला मूखे ।।(दत्तबरुवा 2016:306)

राम नाम राम कथा के कीर्तन से उस लोक में ही गति नहीं मिलती बल्कि इस लोक में भी चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष बिना प्रयास के ही मिल जाता है । राम कथा कीर्तन ही वेद का रहस्य है । यही परम सुख देता है तथा आनन्द का संचार भी करता है । ऐसे ही परम कृपालु राम चरण का भजन या कीर्तन करना चाहिए जिससे संसार सागर को बिना कष्ट के ही हम पार कर जाएँ-

शुनियोक सर्ब्बजने रामर चरित्र ।

बेदर रहस्य पिया प्रतिनित ।।

महन्त सकले आक गावे अविश्राम ।

अप्रयासे सिजे धर्म्म अर्थ मोक्ष काम ।।

अवश्ये साधय सूख करिया आनन्द ।

हेनय रामर भजा पद मकरंद ।।

तेवेसे संसार सिंधू अप्रयासे तरि ।

बोलन्त कन्दलि बोला हरि हरि ।।(दत्तबरुवा 2016:325)

तीन करोड़ गन्धर्वों को मार कर जब राम काज हेतु हनुमान गंधमादन पर्वत को उठा लाते हैं तभी श्रीराम चरणों में हनुमान की अहैतुकी भक्ति का चित्रण कर कविराज माधव कंदली अन्त में पुनः कीर्तन की महानता की व्याख्या करते हुए कीर्तन का कभी भी त्याग न करने की सलाह देते हैं। कविराज कहते हैं कि यह मनुष्य जीवन बड़ी सरलत से नहीं मिलता। अतः हरि का कीर्तन करो जिसके बिन कहीं गति नहीं है-

रामर चरित्र शुनियोक सब्ब्र्जन ।

यावे प्राण थाके केवे नेरिबा कीर्तन ।।

दुर्ल्लभ मनुष्य तनू सेंथरे नपाई ।

बोला राम राम हरि बिने गति नाई ।।(दत्तबरुवा 2016:431)

उत्तरकाण्ड में श्रीमंत शंकरदेव कीर्तन को ही कलियुग में सार कहते हुए सभी से कीर्तन करने का आग्रह करते हैं। वे कहते हैं कि राम-राम पुकार कर नाम का कीर्तन करना चाहिए, जिससे पाप पर प्रहार हो उसका समूल नाश हो जाए। शंकरदेव की एक मात्र अभिलाषा यही है कि वे रघुवंशतिलक, विष्णु के अंश सीता के स्वामी राम को नमस्कार करें तथा सभी जन्म में ही उनकी प्रभु श्री राम के चरणों में भक्ति बनी रहे-

नमो नमो रघूवंश तिलक बिष्णुर अंश

श्रीरामचन्द्र सीतापति।

जन्मे जन्मे रामे गति रामते करोक मति

रामपावे थाकोक भकति।।

कृष्णर किड्करे भणे शुनियोक सर्ब्बजने

कलित कीर्तन धर्म सार।

एरि भाषभुष काम डाकि बोला राम राम

पापत लागोक बूंदामार।।(दत्तबरुवा 2016:482)

रामायण के अन्त में शंकरदेव कहते हैं कि जिस कलि के प्रभाव से राम ने भी मनुष्य रूप में कितना कष्ट सहा, यह कलि काल किसी को नहीं छोडता। मनुष्य रूप में राम ने अवतार लेकर यही शिक्षा दिया। कृष्ण की माया को तर्क से पार पाया नहीं जा सकता। यह ज्ञान पाकर प्रभु पर एकांत भक्ति रखकर इस कलिकाल में कीर्तन कर के सद्गति लाभ करना चाहिए। कृष्ण नाम के अलावा कलियुग में अन्य कोई धर्म नहीं है। शास्त्रों का

यही मत है कि कलियुग में केवल और केवल कृष्ण नाम ही उद्धार का साधन है । जिस प्रकार से सतयुग में समाधि, त्रेता युग में यज्ञ कर के, द्वापर युग में भक्ति भाव से पूजा-अर्चन कर के गति मिलती थी तथा इस कलियुग में केवल नाम-कीर्तन से ही वे सारे फल प्राप्त हो जाते हैं । इसी कारणवश चारों युगों में कलियुग ही सबसे श्रेष्ठयुग है । महान संत इसी कलियुग की प्रशंसा करते नहीं थकते । यहाँ – केवल नाम कीर्तन द्वारा ही सारे फल प्राप्त हो जाते हैं । अतः यह जानते हुए हरि नाम लेकर आसानी से पार पा जाएँ । माधव के नाम कीर्तन से तो काल भी थर-थर काँपने लगता है । यही सर्वोच्च बंधु है । अतः पुकार कर 'राम' नाम कहना चाहिए-

शुना सभासद ईटो रामायण कथा ।

देखा अंतकाले केन रामर अवस्था ॥

परिल इ परा सेइ मरण बिघात ।

नपारी तर्किबे आक कृष्णर मायात ।।

जानिया कृष्णत करा एकान्त भकति ।

कलित हरिर नाम कीर्तनत गति ।।

आउर धर्म कलित नामत परे नाई ।

एभो तेबे शास्त्रर नूबूजि अभिप्राय ।।

सत्य यूगे पूजै बिष्णु धरिया समाधि ।

महा महा त्रेता यूगत आराधि ।।

येन गति द्वापरत पूजि भक्तिभावे ।

कलित कीर्तन करि सबे फल पावे ।।

एतेकेसे कलि श्रेष्ठ चारी यूग माजे ।

प्रशंसे कलिक महा महंत समाजे ।।

धर्म अर्थ काम मोक्ष कीर्तनते पाय ।

कलित परम मूख्य तरण उपाय ॥

जानि अप्रयासे तरा हरिनाम धरि ।

यार भये अन्तक काम्पन्त तरतरि ।।

जगत बांधव ईटो माधवर नाम ।

शंकरे रचिला डाकि बोला राम राम ।।(दत्तबरुवा 2016:512)

इसी के आगे शास्त्रों की बातों का विश्लेषण कर शंकरदेव उत्तरकाण्ड में हरि नाम की महिमा तथा भक्ति से दूर रहने वाले लोगों की विवेचना करते हुए कहते हैं कि जो भी व्यक्ति इस पुण्य-भारत-भूमि में दुर्लभ मानव शरीर प्राप्त करके भी हरि का कीर्तन नहीं करता है, वह यह बात भलिभाँति जानते हुए भी कि हरि-कीर्तन करने से हृदय में हरि निवास करते हैं वह फिर भी कीर्तन नहीं करता तो वह व्यक्ति जीवित रहते हुए भी मरे हुए मृतक मुर्दे के समान है । जिस प्रकार से लोहार की भाथी साँस लेती है परंतु उसमें प्राण नहीं होते हैं वैसे ही वे मनुष्य भी हैं । अतः उस चक्र पाणि कृष्ण का कीर्तन करो, उसी की भक्ति करों तभी उद्धार हो पावेगा-

लभिया भारते नरतनू यिटो

नकरि हरि कीर्तन ।

हृदयते हरि आछन्त जानिया

निचिंते तान चरण ।।

सिटो मूढ़मति एरिया भकति

कर्म्मत करे बिशवास ।

ताक परिहरा जीयन्तते मरा

भातिर येन निश्वास ।।

हेन निष्ठ जानि चिंता चक्रपाणि

हरिर सूमरि नाम ।

पूरुष उद्धारा आपोन निस्तारा

डाकि बोला राम राम ।।(दत्तबरुवा 2016:517)

अतः इस प्रकार से हमने देखा कि कीर्तन ही इस घोर कलिकाल का मुख्य धर्म है । कीर्तन के दवारा ही एक पापी मनुष्य भी भगवद् भक्ति का तथा मुक्ति का लाभ भी प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है ।

### 4.3.3 स्मरण

अपने इष्ट देव का स्मरण करना, शुद्ध भाव तथा हृदय से उनके गुण-समूहों को याद करना भी भक्ति की नौ विधियों में तृतीय विधि है । स्मरण कर के अपने आराध्य की कृपा तथा भक्ति का फल भी पाया जा सकता है। श्री जयदयाल गोयंदका स्मरण भक्ति की व्याख्या करते हुए कहते हैं "भगवान के स्वरूप, नाम, लीलाओं आदि का मन से स्मरण करना अनेकों शास्त्रों में बतलाया गया है ।"(गोयंदका 2019:21)

'सप्तकाण्ड रामायण' में अनेक स्थानों तथा दृश्यों में स्मरण भक्ति की महिमा पर भी लेखकों ने प्रकाश डाला है । गुह चंडाल की कथा प्रसंग में माधव देव राम और गुह की मित्रता का सुंदर वर्णन करते हैं । साक्षात् परम ब्रह्म किस प्रकार से एक साधारण से चंडाल जाती के गुह को अपना मित्र बनाकर उसे जगत में ऐसा भाग्य देते हैं जैसा कि स्वयं ब्रह्मा या इन्द्र के स्वप्न में भी संभव न हो । भगवान राम इतने दयालु तथा कृपा के सागर हैं कि अपनी अहैतुकी कृपा का पात्र साधारण से भी अति साधारण जन को बना लेते हैं । राम की भक्ति रूपी कृपा तथा मित्रता रूपी अमृत का पान कर गुह अपना सौभाग्य समझता है । वह नयनों में श्री राम स्मृति रूपी जल भर कर हृदय में श्रीराम की भक्ति का दीपक जलाकर अपने प्रभु से एक महान भक्त की इच्छा को साधारण भक्ति में पिरोकर कहता है कि भगवान राम की भक्ति का दीपक सदा उसके हृदय में प्रकाशित रहे । इसी प्रसंग को वर्णित करते हुए माधव देव लिखते है कि गुह चंडाल अपने मन में प्रभु श्रीराम के चरण-कमलों को स्मरण करता हुआ अपनी सेना के साथ अपने स्थान को चला जाता है । यह स्मरण भक्ति क्षणभंगुर नहीं थी । भगवान की स्तुति गुह चंडाल के हृदय में ऐसी व्याप्त थी कि रात-दिन बस अपने आराध्य का ध्यान, उनका स्मरण तथा उनके चरणों की सेवा की दृढ़ इच्छा पुनः राम-वन-गमन प्रसंग में पूरी हो जाती है-

राम पादपद्म दूई मने धरि रैल ।

सैन्यसमे गुह निजस्थाने चलि गैल ।(दत्तबरुवा 2016:54)

अतः यहाँ पर गुह में स्मरण भक्ति का उद्भव देखा जा सकता है ।

स्मरण भक्ति का सबसे प्रबल उदाहरण राजा दशरथ में हमें देखने को मिलता है । ऋषि विश्वामित्र जब दशरथ से राम को माँगने आते है तब राजा होते हुए भी राम को अपने हृदय से दूर करने से मना कर देते हैं । परंतु बाद में वशिष्ठ ऋषि के समझाने पर ही राजा दशरथ राम को ऋषि विश्वामित्र को सौंप देते हैं । इतना ही नहीं दशरथ के हृदय में राम-भक्ति इतनी प्रबल है कि कैकेयी द्वारा वनवास दिए जाने का वर माँगे जाने पर ही वे अस्वस्थ हो जाते हैं । परंतु अपने मुख से राम को वन गमन की आज्ञा नहीं दे पाते । राम ही पिता के वचनों की रक्षा हेतु स्वयं वन चले जाते हैं । राम के वन प्रयाण के पश्चात शैया पर लेट अचेत हो जाते हैं । राम की स्मृति उनके हृदय से मिटती नहीं । अपने प्रिय पुत्र राम से वियोग उनको दग्ध कर देती है ।

दशरथ दिन-रात केवल राम का ही स्मरण करते रहते हैं । उनके हृदय व मस्तिष्क में राम की इतनी प्रबल भक्ति रहती है कि राम वन गमन के छठे दिन ही राम का चिंतन-स्मरण करते हुए उनके वियोग में अपना प्राण तज देते हैं । यह स्मरण भक्ति संसार में अद्वितीय है । कौशल्या कहती हैं कि स्वामी ने जाने किस तरह और कैसा पुनि कर्म किया था कि राम का स्मरण तथा राम का ही नाम लेते हुए उनकी सद्गति हो जाती है । राम का स्मरण करते-करते ही राजा के प्राण वैकुण्ठ को चले जाते हैं । ऐसी स्मरण-भक्ति दुर्लभ है । इसकी एक सुंदर झाँकी द्रष्टव्य है-

कौशल्या बोलन्त प्रभू किनो पुण्य कैल ।

राम राम सुमिरन्ते प्राण छूटि गैल ।।(दत्तबरुवा 2016:148)

'श्रीमद्भगवद्गीता' के अष्टम अध्याय में भगवान स्वयं स्मरण की महिमा का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जो व्यक्ति उन भगवान का स्मरण करने में अपना मन निरंतर लगाये रखकर अविचलित भाव से ध्यान करता है वह उनको ही प्राप्त होता है-

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।

परमं पुरुषं दिवयं याति पार्थानुचिंतयन् ॥(प्रभुपाद, श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप 2011:277)

सुमिरण अथार्त स्मरण-भक्ति की ही व्याख्या करते हुए तथा इस स्मरण-भक्ति से ही जीव का उद्धार संभव है, यही बात बताते हुए माधव देव अपने प्रभु के गुणों का गान करते हैं तथा यही याचना करते हुए कहते हैं-

मई महामूढ़ परम पामर

तोमात लैला शरण ।

तोमात भकति रहे येनमते

कृपा करा नारायण ।।

तयू गुणनाम धर्म्म अनूपाम

रहोक मोहोर मूखे ।

परम दुर्ल्लभ तोमार चरण

सूमरो परम सूखे ।।(दत्तबरुवा 2016:101)

भरत-शत्रुघ्न राम के परम भक्त थे । राम-वन-गमन की बात सुनकर तथा राज्य के लिए भरत को त्यागकर वन चले जाने की बात पर भरत-शत्रुघ्न व्याकुल हो उठते हैं। आज के समाज में एक भाई दूसरे भाई की धन-संपति तथा भोग-ऐश्वर्य के निमित्त हत्या तक कर देता है । अतः राम के प्रति ऐसी प्रीति निश्चय ही सराहनीय तथा अनुसरणीय है । राम को महल में पाकर उनका स्मरण कर दोनों भाई व्याकुल हो उठते हैं। उनके प्राण भी अब देह में ठहरना नहीं चाहते। वे अपने प्राणों को कोसते हुए कहते हैं कि राम के वियोग को सह लेने वाले उनके ऐसे कठोर हृदय को तो फट जाना चाहिए। उनके यह प्राण निकलते क्यों नहीं ? राम का स्मरण कर भरत-शत्रुघ्न व्याकुल हो उठते हैं। पिता दशरथ की अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न कर शीघ्र ही दोनों भाई राम का स्मरण कर वन को प्रस्थान करते हैं। रास्ते में ही गुह चंडाल का निवास देखकर तथा राम के परम मित्र जानकर वे विश्राम करते हैं। राम गुह के गृह एक रात शयन कर चुके थे अतः राम जहाँ विश्राम कर चुके थे उस स्थान को निषाद द्वारा दिखाए जाने पर दोनों भाई प्रभु श्री राम का स्मरण कर रोने लगे। उन्हें राम का स्मरण इतना व्याकुल करने लगा कि दोनों के प्राण निकलने की स्थिति हो गयी । इस स्मरण-भक्ति प्रसंस को कविराज माधव कंदली ने कुछ इन शब्दों में अंकित किया है-

भरते रामर सिटो तृणशय्या चाई ।

शत्रुघने समे कांदिलन्त दूयो भाई ।।

महामर्म्मे दूईरो येन प्राण याई फूटि ।

हा राम बूलि कान्दे पृथिबीत लूटि ।।(दत्तबरुवा 2016:164)

किष्किंधा कांड में श्री राम और सुग्रीव की मित्रता का प्रसंग आता है। प्रसंग में कविराज माधव कंदली स्मरण भक्ति की महिमा का सुंदर वर्णन करते हैं। कविराज माधव कंदली कहते हैं कि यह समस्त संसार वर्षा में बिजली की कौंध की भाँति ही अस्थिर है। केवल यहाँ राम के स्मरण करने से ही करोड़ो पुरुषों का स्वतः उद्धार हो जाता है। अतः कविराज कहते हैं कि इसीसे सुखपूर्वक पार उतर जाएंगे। यही मुख्य धर्म है। अब से यह जानकर राम-कथा को ही सार बना कर स्मरण भक्ति करना चाहिए-

बिजूली चटक येन अथिर संसार।

राम सूमरणे कोटि पूरुष उद्धार।।

शूना सभासद राम चरित्र उत्तम।

समस्त लोकर इसे धर्म्म मुख्यतम।।

ईहार स्मरणे सूखे तरिबा संसार।

जानि रामचन्द्रर कथाक करा सार।।(दत्तबरुवा 2016:231)

उत्तरकांड की समाप्ति में श्रीमंत शंकरदेव कहते हैं कि शास्त्र का यही सार या कथन है कि हरि की स्मरण-भक्ति राजा समान तथा बाकी समस्त सांसारिक पुण्य आदि इसके दास हैं। हरि नाम स्मरण में जिसकी इच्छा या मति नहीं है वह अपने आप को ज्ञानी या पंडित व्यर्थ ही कहता है। राम ही हमारे पिता-माता, पुत्र आदि समस्त रिश्ते नाते हैं तथा राम ही जीव के आत्मा या उसके प्राण हैं। जप-ज्ञान इत्यादि तथा राम ही करोड़ों तीर्थ स्थान के समान हैं। राम के चरण में ही शंकर की गति है तथा वे उनकी सेवा भी इष्टदेव के रूप में

करते हैं। सारे धर्म, कर्म, न्याय इत्यादि तथा समस्त आत्मीय बांधव राम ही हैं, ऐसा जानकर ही शंकरदेव राम की शरण ग्रहण करते हैं-

शास्त्रत एहिसे मज्जा हरिर स्मरण राजा

आन पूण्य किङ्कर ईहार।

हेन नामे नाई इच्छा पंडित बोलावे मिछा

आनमते नतरे संसार॥

रामे पितृ मातृ सूत सुहृद सोदर बंधू

रामे आत्मा रामे जीव प्राण।

रामे जप यज्ञ दान रामेसे परम ज्ञान

रामे कोटि शत तीर्थ स्नान॥

रामे मोर इष्टदेव रामकेसे करो सेव

गति मोर रामर चरण।

रामे धर्म्म रामे कर्म्म रामेसे बान्धव मर्म्म

जानि लैलो रामत शरण॥

हेन जानि मोर चित्त रामर चरण चिन्त

बिषय चिंतार एरि काम।

पापत पचा लोकचारि मोर मूखे आगबाढि

सब सर्ब्बदाये बोला राम राम ॥(दत्तबरुवा 2016:522)

इस प्रकार से हमने देखा कि रामायण में राम भक्ति की स्मरण विधि का यहाँ सुंदर उदाहरण प्रस्तुत हुआ है।

### 4.3.4 पाद-सेवन

भगवान के चरण में आसक्ति तथा उनके पाद-पद्म की सेवा पूजा करना ही पाद-सेवन कहलाता है। श्री भगवान के चरण-युगल की सेवा, वंदना तथा चिंतन तो समस्त ब्रह्मांड ही करता है। ब्रह्मा, महेश्वर आदि देव भी भगवान से यही याचना करते रहते हैं कि भगवान मुरारी के पाद-पद्म की सेवा उन्हें प्राप्त हो। हृदय में केवल भगवान के चरण-युगल के चिंतन की आसक्ति हो और कुछ नहीं। 'श्रीचैतन्य-चरितामृत' के मध्य लीला भाग में वर्णित है कि मनुष्यों को भक्तों की संगति, नाम कीर्तन, कथा श्रवण तथा अर्चविग्रह की पूजा करनी चाहिए-

साधु-संग, नाम-कीर्तन, भागवत-श्रवण।

मथुरा-वास, श्री-मूर्तिर श्रद्धाय सेवन ॥

(गोस्वामी और प्रभुपाद, श्रीचैतन्य-चरितामृत- मध्य लीला-भाग-2 2013:174)

'सप्तकाण्ड रामायण' का प्रत्येक राम भक्त पात्र अपने आराध्य प्रभु श्री राम के पाद-पद्म की सेवा में ही अपनी आसक्ति दिखाता है। भरत को राज्य मिला तो उन्होंने भगवान की पादुका की सेवा की। लक्ष्मण को वनवास नहीं मिला परन्तु वह भगवान के पाद–पद्म की सेवा परायणता में निमग्न गृह त्याग कर वन को चले।

सीता सुकुमारी राजनंदिनी थीं। राजवधु थीं। परन्तु स्वामी की चरण सेवा हेतु वन-वन भटकने लगीं। गुह राज निषाद चांडालों का राजा था परन्तु भगवान की चरण सेवा के लिए राज्य त्याग करने को तत्पर था। शत्रुधन भी भाई के अनुगामी हुए। विभीषण भी रावण जैसे शक्तिशाली राजा को तथा अपने भ्राता को त्याग कर राम की चरण सेवा में निमग्न हो गए। सुग्रीव, हनुमान, अंगद आदि अनेकों ऋषि मुनि तथा वानर भालू तथा साथ ही समस्त प्रजा जन केवल राम के चरणों में प्रीति होने के कारण ही सबकुछ त्याग कर चरण सेवा में प्राणों का निसर्ग कर निकल पड़े। 'सप्तकाण्ड रामायण' में राम की भक्ति में दृढ़ भक्तों की चरण-सेवा के ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जिनमें कुछ का यहाँ उल्लेख द्रष्टव्य है। राजा दशरथ के स्वर्गवास के पश्चात जब मंत्रिगणों ने भरत को राज्य देना चाहा तब भरत अपने को धिक्कार कर कहते हैं कि वे महापापी हैं। उनके ही करण आज राम को वन जाना पड़ा। पिता राम के वियोग में ही वैकुंठ गामी हुए। अतः अपने को धिक्कार कर वे अपने हृदय की बात कहते हैं कि उनका हृदय केवल और केवल राम की भक्ति में, उनकी चरण सेवा में लगा रहना चाहता है। वे सभी को कहते हैं कि वे यहाँ राज्य सुख का भोग करें और उनके स्वामी राम वन में भटकते रहें, यह संभव नहीं। स्वामी भूखा हो और सेवक भोग करे ? अतः यहाँ पर भरत की सेवा भावना की पराकाष्ठा के दर्शन होते हैं-

नकरियो बिलम्ब शुनियो मन्त्रीबर।

मई सूखे आछो राम बनर भितर।।

येन ईश्वरर उपबास परे नित।

भृत्यसबे भोजन करय पञ्चामृत।।(दत्तबरुवा 2016:159)

भरत कहते हैं कि उनके बड़े भाई गुरु के समान हैं तथा वे राम के सेवक हैं। भरत चाहते हैं कि राम चरणों की वे नित्य सेवा करते रहें। अतः कोई राज्य भोग का हृदय विदारक उपदेश उन्हें ना कहे-

ज्येष्ठ भाई गुरुसम तान मई भृत्य।

चरणत सेवा केने थापिबोहो नित्य ।।

आउर बार हेन निदिबाहा उपदेश।

सैन्य सजायोक बने हैबोहो प्रवेश ।।(दत्तबरुवा 2016:159)

इसी अध्याय के आगे के प्रसंग में जब मन्त्री गण संदेहात्मक प्रश्न कर के भरत के हृदय की भक्ति को जानने का प्रयत्न करते है कि कहीं भरत का सैन्य लेकर राम को लौटा लाने की भावना उनकी चाल तो नहीं हैं ? अतः भरत तब गौ ब्राह्मणों की शपथ खा-खा कर कहते हैं कि अगर उनकी भवना गलत हो तो उन्हें गौ-ब्राह्मण हत्या का दोष लग जाए। पुनः अपने हृदया की भक्ति को प्रकाशित कर भरत कहते हैं कि राम ही उनके सुहृद और प्राण हैं। राम के चरणों के सिवा वे और कुछ नहीं जानते हैं। राम ही भरत के जप-तप तथा इष्टदेव हैं। राम के चरणों की सेवा ही उनका परम ध्येय है-

मईतो जानो रामेसे सूहृद मोर प्राण।

रामर चरण बिने नजानोहो आन ।।

रामे जप तप मोर रामे इष्टदेव।

रामेसे चरणक करिबोहो सेव ।।

यत यत महागुण आछय रामत।

त्रिभूवन मध्ये कोने कहिबे शकत ।।(दत्तबरुवा 2016:160)

भरत जब वन जाकर राम को राज्य लौट चलने का आग्रह करते हैं, तब राम वचन का पालन करते हुए भरत को अयोध्या जाकर शासन व्यवस्था संभालने की सलाह देते हैं । यह सुनकर भरत रो पड़ते हैं । वे पुनः राम से आग्रह करते हुए उनका चरण पकड़ते हैं । राम असंतोष छोडकर वापस चल चले, यही आग्रह वे पुनः - पुनः राम से करते हैं । भरत राम को कहते हैं कि वे ही उनके भैया, पिता तथा गुरु हैं । राम के चरणों के सिवा उनकी कोई गति नहीं है-

पितृसम भाई तुमि मोर गुरुदेव ।

तोमार चरण छारि गति नाहि केव ।।(दत्तबरुवा 2016:173)

जब राम फिर भी नहीं मानते हैं तब भरत राम के दोनों खड़ाऊ माँग लेते हैं, ताकि वे राजमहल जाकर भी राम की चरण सेवा से वंचित न रह जाएँ । भरत कहते हैं कि प्रभु उन्हें दोनों पनहियाँ दे दें, ताकि सिंहासन पर रखकर उनकी सेवा करके उनकी आज्ञा से ही वे राज-काज संभाले । भरत गृह में रहकर भी वनवासी का जीवन बिताने की आज्ञा माँगते हैं ।

भरत राम की चरण पादुकाओं को अयोध्या ले आते हैं । वे कहते हैं कि प्रभु की पादुकाओं में मन लगाकर निष्ठापूर्वक सेवक बनकर राज-काज संभालेंगे । श्वेत-छत्र धारण कर पादुका को सिंहासन पर बिठाकर भरत उसकी नियम पूर्वक पूजा करते हैं । भरत की पाद-पद्म सेवा भक्ति अद्वीतिय है-

प्रभू राघवर मइ ये सेवक

तान पद मने धरि ।

सत्ये सत्ये मई आदेश ताहान

पालिबोहो निष्ठ करि ।।

चैध्यय बरिष मोर प्रभू राम

यावे थाके बनमाज ।

ताहान पादूका शिरे धरि मई

चर्च्चिबोहो पावे  राज ।।

बशिष्ठ प्रमुख्ये यत पुरोहित

पढ़िलंत सूमंगल ।

धवल छत्रेक भरते धरिल

प्रजा करे कौतूहल ।।

पानैयूरि निया पाटत बैसाया

ताके राज्य भार दिल ।

जय जय राम बूलि प्रजासबे

आनंद आति करिल ।।(दत्तबरुवा 2016:177)

भरत की यह सेवा परायणता, चरणों में भक्ति केवल यहीं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह भावना तो अंत उनके हृदय में तक बसी हुई है। राम जब उत्तरकाण्ड के अंत में सभी को राज्य बाँटकर दे देते है तब भी भरत राज्य लेने से इनकार कर देते हैं। वे राम से याचना करते हुए कहते हैं कि चरण सेवा ही उनका ध्येय है। चरण सेवा के लिए ही उन्होंने राज्य का पहले भी त्याग कर दिया था-

किसक आमार बुलिलाहा हेन

ददा निकारुण काज।

तोमार चरण सेवार निमित्ते

पूर्ब्बतो नलैलो राज ।।(दत्तबरुवा 2016:511)

'नवधा-भक्ति' कृति में 'रामचरितमानस' महाकाव्य कि व्याख्या करते हुए भरत की पाद-सेवन भक्ति का विश्लेषण करते हुए जयदयाल गोयंदका कहते हैं- "भगवान श्री राम के चरणचिन्ह, चरण रज और चरण पादुका के सेवन से भरत को आनंद प्राप्त होता है।"(गोयंदका 2019:31)

भगवान के पाद-पद्म की सेवा भावना केवल भरत में ही दृढ़ नहीं थी। बल्कि यह भावना लक्ष्मण, सीता, गुह, विभिषण, हनुमान आदि सब में विधमान थी। सीता ने जब स्वयंवर सभा में राम के दर्शन किए, तभी उनका हृदय राम की सेवा के अधीन हो गया। वे मन-ही-मन कहती हैं कि पिता के वचनों की उपेक्षा कर के भी वे राम के चरणों की सेवा करेंगी-

रामत बिनाइ आन पूरुषक

नबरिबो कदाचित ।

किबा काजे मोर पितृ करिलंत

अंगीकार बिपरीत ।।

तथापि आनक नभजिबो यदि

धनूत गुण लगावे ।

पितृर बचन छन्न करि मई

भजिबो रामर पावे ।।

रामर नखर समाने नाहिके

इतिनि लोकर माजे ।

इहांक एरिया आन पूरुषक

भजिबो  कमन काजे ।।

मोहर कर्म्मर फले जानो आनि

रामक मिलाईला बिधि ।

अकस्मात हेन दरिद्रर हाते

उपगत नवविधि ।।

रामक एरिया कोन अभागिनी

आनक भजिबे याय ।

हातर अमृत एरि कोनजनी

मरिबेक बिष खाई ।।

एहिमते सीता देवी कांदिलंत

रामर चरण सार ।(दत्तबरुवा 2016:80)

सीता हरण के पश्चात जब रावण सीता को बंदी बना लेता है तथा क्रूर वचन कहकर सीता को डराता है तब भी सीता केवल राम के चरण युगल में अपनी भक्ति दृढ़कर उनसे प्रार्थना करती हैं कि वे प्रभु श्री राम के चरण कमल की कृपा चाहती हैं । तथा उनके मुख से कभी प्रभु का नाम तथा हृदय से कभी चरणों का ध्यान न छूटे-

जय जय रघू बंश शिरोमणि

रामचन्द्र कृपासिंधू ।

तोमार चरण पंकजर मागो

कृपा मकरंद बिन्दू ।।

तयू नाम मोर मूखे नछारोक

चरण नेरोक मने ।(दत्तबरुवा 2016:288)

वन-गमन प्रसंग में जब राम अकेले ही वन के लिए निकल जाते हैं तब लक्ष्मण राम के चरणों में गिरकर उनके साथ चलने का आग्रह करते हैं। वे कहते हैं कि राम के चरणों के आगे सैकड़ों राज्य भोग बेकार है। वे राम का सेवक बन उनके चरणों के साथ रहने की आज्ञा माँगते हुए कहते हैं-

एको पक्षे राघवर चित्त नलरिल।

हाथ योरे लखाई गैया चरणे परिल।।

शुनियोक ददा मोर कृपामय मति।

राज्यभोग शतेक तोमार पावे गति।।

दूखर सहाय हैबो योगाईबोहो फल।

सेवा करि थाकिबोहो चरण यूगल।।

तोमार संगति हैबो मोर एहि सार।

बनबासे परिचर्या करिबो तोमार।।(दत्तबरुवा 2016:119)

विभिषण राक्षस जाति के थे। परन्तु प्रभु श्रीराम की भक्ति, उनकी राम चरणों में आसक्ति उनके जीवन का उद्धारक बन गया। रावण दवारा त्याग दिए जाने पर वे राम की शरण में आ जाते हैं। राम चरणों की सेवा को ही वे अपना परम लक्ष्य मानकर निवेदन करते हुए वानरों से कहते हैं कि वे राम-चरणों की शरण में आए है। अतः उन्हें राम को सौंपकर पुण्य करें-

लंकात एरिलो आपनार परिकर।

आन गति नाई दुई चरण रामर ।।

शुनियो बानर राजा पूण्य संकटियो ।

रामर समीपे निया मोक समपिर्यो ।।(दत्तबरुवा 2016:327)

रावण विजय के पश्चात राम जब लंका का राज्य विभिषण को सौंप देते हैं तभी विभिषण राम चरणों की सेवा हेतु भगवान से निवेदन करते हैं कि भगवान राम उन्हें कुछ दिन लंका में रहकर राम-सीता की चरण सेवा करने का अवसर प्रदान करें-

राम लक्ष्मणर सीता गोसानीर

चरण मइ आराधो ।

लंका नगरत कत दिन थाका

एहिसे कार्य्यक साधो ।।(दत्तबरुवा 2016:453)

राम के चरण-युगल की वंदना, उनकी सेवा ऋषियों का भी ध्येय रहा है । इसीलिए गौतम ऋषि राम की चरण वंदना करते हुए कहते हैं कि राम एक महान पुरुष तथा अनादि ईश्वर भी हैं । उनके चरणों के सिवा और कोई गति नहीं है । राम चरण की धूलि भी इतनी कृपामयी है कि पत्थर बन चुकी अहिल्य भी पुनः स्त्री बन केआर धन्य हो जाती है । अतः महान संतगण राम की चरण धूलि अपने माथे पर धारण करने की आशा करते हैं। सभी नित्य राम के युगल चरणों की ही सेवा करते रहते हैं-

पाचे ऋषि गौतमे रामक मातिलंत ।

शुनियोक राम तूमि पूरुष महन्त ।।

अनादि ईश्वर तूमि देवतारो देव ।

अनाथर गति तूमि बिने नाई ।।

तयू पाद धूलार महिमा अदभूत ।

याहार परशे भैला अहल्या मूकूत ।।

भालेसे तोमार पदधूला आशा करि ।

महा महा महन्ते समस्त परिहरि ।।

तोमार चरणे सेवा सदाय करन्त ।

तयू महा प्रसादे मोक्षको नादरन्त ।।(दत्तबरुवा 2016:78)

गुह चांडाल की भी भक्ति राम के पाद-पद्मों में अद्वितीय है । वह भी अपने चित्त को राम मय बनाकर रखते हैं । जब भरत राम को लौटा ले जाने हेतु वन में आते हैं तब गुह भरत की भी सेवा राम जैसा ही करते हैं । यही एक महान भक्त का लक्षण है । महान भक्त सदैव अपने स्वामी तथा उसके सेवक की चरण वंदना में तथा पाद-पद्म सेवा में लगा रहना चाहता है । वह कहता है कि जिस प्रकार से राम के चरणों में उसका मन है वैसे ही भरत की भी सेवा उसका धर्म है,-

रामर चरणे मात्र मोर येन चित्त ।

भरते हय सेवा करिते उचित ।।(दत्तबरुवा 2016:163)

मंत्रि सुमंत्र की प्रभु श्रीराम के चरणों में भक्ति भी निश्चय ही अनुसरणीय है । मंत्रि केवल भगवान के चरण कमलों की सेवा के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहते । राम के वन आने के पश्चात वह भी राम के ही संग रहना चाहते हैं । वह भी लक्ष्मण की ही भांति अपने आराध्य के चरण पंकजों की सेवा करने के अभिलाषि है । वह रोते हुए कहते हैं कि वे देश नहीं लौटेंगे । अपने प्रभु श्रीराम की ही सेवा करेंगे-

आशेष कान्दिया बोले चरणत धरि ।

देशक नयाईबो थाको तयू सेवा करि ।।(दत्तबरुवा 2016:138)

लंकाकाण्ड में कविराज माधव कंदली कहते हैं कि इस चरा-चर ब्रह्माण्ड के नियन्ता प्रभु राम के चरण को स्वयं ब्रह्मा शिव आदि देवता नमस्कार करते हैं, उनकी सेवा किया करते हैं । उन ही राम चंद्र ने अवतार धारण कर संसार का उद्धार किया है । अतः माधव कंदली प्रार्थना करते हैं कि श्रीराम के चरणों में उनकी प्रीति रहे । क्योंकि वे ही सबकी गति हैं-

नमो रामचन्द्र आदिदेव महेश्वर ।

याहार अधीन चराचर निरंतर ।।

नित्य शुद्ध बूद्ध यिटो जगत कारण ।

ब्रह्मा आदि देवे सेवे याहार चरण ।।

हेनय ईश्वर रामचन्द्र अवतरि ।

साधीला देवर कार्य्य असूर संहरि ।।

मोर गति नाई बिने तोमार चरण ।

बोला राम राम यत सभासदगण ।।(दत्तबरुवा 2016:381)

माधव कंदली सभी को हृदय में राम को रखने की बात कह कर राम चरणों की शरण लेने की बात करते हैं। अतः 'सप्तकांड रामायण' में राम की भक्ति की, चरण-पद्म सेव की भावना सर्वत्र व्याप्त है।

### 4.3.5 अर्चन

'श्रीमद्भागवतम्' में वर्णित है कि भगवान की पूजा, अर्चना इत्यादि करना ही अर्चनम है। श्री जयदयाल गोयंदका अपनी अनुपम कृति 'नवधा भक्ति' में अर्चन भक्ति विधि की व्याख्या करते हुए शास्त्रों की उक्ति को सत्य बताते हुए कहते हैं "भगवान के किसी भी स्वरूप का वस्त्राभूषण, आयुधादि से युक्त हस्तपदादि की मंगलचिन्हों सहित अत्यंत श्रद्धा और प्रेम के साथ पूजन करना ही अर्चन भक्ति के प्रकार हैं।"(गोयंदका 2019:21)

'सप्तकाण्ड रामायण' में भी भगवान राम की अर्चन भक्ति विधि का सुन्दर उदाहरण दृष्टव्य है। समस्त ऋषि गण, भरत इत्यादि भगवान की पूजा-अर्चना करते हुए नज़र आते हैं। जैसे राम-लक्ष्मण जब चौदह करोड़ राक्षसों का संहार कर सुबाहु और मारीच को मार रहे थे, उनकी वीरता देखकर देवता तथा ऋषि मुनि अत्यंत ही प्रसन्न हुए। वे राम का गुणगान करने लगे। इसी के आगे कवि माधव कंदली लिखते हैं कि ऋषि विश्वामित्र यज्ञ की पूर्णाहुति देते हुए यज्ञ समाप्त कर राम की स्तुति करते हैं। वे कहते हैं कि राम ही अनादि अनंत हैं। यज्ञ का फल उनसे ही प्राप्त होता है। सारे यज्ञ का फल राम को समर्पित करते हुए विश्वामित्र भक्ति भाव से कहते हैं-

तूमि नारायण देव अनादि अनंत ।

तूमिसे यज्ञर फलदाता भगवन्त ।।

तूमिसे आपूनि धर्म्म कर्म्म यज्ञ यत ।

जानि समर्पिलों यज्ञ तयू चरणत ।।

तूमि केवल सत्य बोलो परमार्थ ।

तोमार प्रसादे राम भैलोहो कृतार्थ ।।

तोमार बिनाई आन सबे व्यवहार ।

ताके प्रवत्ताबे प्रति भैला अवतार ।।

आपूनि आचारी धर्म्म मनुष्यर नय ।

तोमाक ईश्वर बूलि केहो नजानया ।।(दत्तबरुवा 2016:64)

विश्वामित्र तभी समस्त यज्ञ का फल राम को समर्पित करते हुए उनकी अर्चना करते हैं। विश्वामित्र के संग राम ने जाकर जब अहिल्या का उद्धार किया तब गौतम ऋषि तथा अहिल्या के पुत्र शतानन्द ने हर्षित होकर राम के गुणों की व्याख्या करते हुए अर्चना की। वे कहते हैं कि जिसकी आशा करते हुए बड़े-बड़े पुरुषार्थी महापुरुष भी त्याग कर के ललाते हैं उन्ही परम पुरुषोतम भगवान की चरण धूलि उनकी माता को प्राप्त हुई। अब अहल्या का उद्दार  हो गया। उन्होंने अपनी अनेक पुण्य राषि के बल पर ही आज स्वयं भगवान के चरणारविंदों के दर्शन पाएं। अतः शतानन्द राम की अर्चना करते हुए कहते हैं-

याक आशा करि  सर्ब्ब पूरुषार्थ

एरे महा महाजने ।।

हेनय परम दुर्ल्लभ धूलाक

पाईला मातृ मोर लाग ।

जानि लोक तरा कोटि जनमर

आछे तान महाभाग ।।

आमियो चक्षूये देखिलो रामक

कतबा पुण्यर फले ।

एहि बूलि शता - नन्दे राघवक

अर्च्चिलंत कौतूहले ।।(दत्तबरुवा 2016:80)

शिव धनुष भंग करने पर परशुराम के क्रोध का निवारण कर राम जब परशुराम को भी परास्त कर देते हैं, तभी विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि ऋषि गण राम की पूजा अर्चना कर उनके यश और पराक्रम का गुणगान करते हैं-

बिश्वामित्र बशिष्ठ प्रमूख्ये ऋषिगणे ।

पूजिलंत राघवक प्रशंसा बचने ।।

परम पूरुष राम जगत आधार ।

रामरुपे पृथिबीत भैला अवतार ॥(दत्तबरुवा 2016:98)

भरत जब वन से राम की चरण पादुका लाकर राज सिंहासन पर स्थापित कर विधिवत पूजन अर्चन करते हैं, उस समय की भक्ति अर्चन भक्ति के रूप में प्रकट होती है । राम का आदेश शिरोधार्य कर उनकी खाड़ाऊँ की निरंतर पूजा अर्चना करते हुए भरत नंदीग्राम में रहते हैं-

रामर पादुकायूरि पूजि निरंतर ।

नंदिग्रामे स्थित भैला भरत कूमार ।।

आयोध्या नगरे रहिलन्त शत्रुघन ।

रामर आदेश शिरे धरि दूयोजन ।।(दत्तबरुवा 2016:179)

रावण विजय के पश्चात राम जब लौटकर भरद्वाज मुनि के आश्रम में प्रवेश करते हैं तभी भरद्वाज ऋषि भी भरत की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि भरत राम के बड़े भक्त हैं । वे भी फल-मूल का भोजन करते हुए व्रत कर के राम की चरण पादुकाओं की विधिवत पूजन अर्चन करते हैं-

भरद्वाजे राघवक दिलन्त सिद्धान्त ।

शुनियोक भरतर यिमत वृतांत ।।

तोमार सदृश तान परिधान चिर ।

अस्थि चर्म्म मांस सार पंकित शरीर ।।

भाले शुनि आछो भरतर येनमत ।

भरत कूमार बर तोमाते भकत ।।

निते पानै पूजन्त भोजन फल मूले ।

माव भाई सहिते आछन्त अनूकूले ।।(दत्तबरुवा 2016:97)

केवल भरत ही नहीं शबरी में भी अर्चन भक्ति विद्यमान है । श्री जयदयाल गोयंदका 'रामचरितमानस' में शबरी की अर्चन भक्ति की व्याख्या करते हुए लिखते हैं "शबरी-जैसी हीन जाति की स्त्री भी केवल बेरों से ही भगवान को संतुष्ट कर परम पद को प्राप्त हो गयी ।" (गोयंदका 2019:37)

इस प्रकार से यहाँ अर्चन भक्ति के भी अनेकों उदाहरण देखने को मिल जाते हैं ।

### 4.3.6 वंदन

वंदनम् नवधा भक्ति की ही एक विधि है जिसमें भगवान की स्तुति की जाती है । द्वापर युग में भी वर्णित है कि अक्रूरजी ने भगवान की स्तुति कर के ही पूर्णता प्राप्त की थी । भगवान श्रीकृष्ण की कृपा का लाभ उन्हें स्तुति करके अथार्त कृष्ण की वंदना कर के, उनको नमस्कार करके ही मिला था । 'श्रीमद्भगवद्गीता' में भगवान घोषणा करते हैं कि उन्हें नमस्कार करके, उनकी पूजा करके उन भगवान को प्राप्त कर पाना संभव है,-

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।

मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायण: ॥(प्रभुपाद, श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप 2011:327)

'सप्तकाण्ड रामायण' में भी अनेकों ऐसे प्रसंग हैं जिसमें भक्त भगवान की स्तुति, उनकी वंदना करते हैं । क्षीरसमुद्र में विराजित नारायण की स्तुति करने तथा दशरथ के गृह अवतरित होने हेतु प्रार्थना करने के लिए ब्रह्मा आदि सभी देवता गण याचना करने जाते हैं । भगवान नारायण की दिव्य छवि देखकर जब ब्रह्मा आदि

देवतागण भगवान की स्तुति करते हुए कहने लगे कि वे सारे देवतागण भगवान की शरण में आए हैं। जगत के एक मात्र स्वामी के अलावा अब कोई सहारा नहीं है। वे ही सृष्टि के आदि पुरुष हैं। नारायण ने ही अपने एक कटाक्ष मात्र से संसार की सृष्टि कर डाली थी। अतः सभी देवता उनकी शरण में आए हैं, नारायण उनका उद्धार करें। इस प्रकार से ब्रह्मा आदि देवता भगवान की वंदना करते हुए कहते हैं-

अवनत माथे स्तुति करे देवगण।

त्राहि त्राहि हरि लैलो तोमात शरण।।

तूमि बिने आमार नहिके आन गति।

चराचर जगतर तूमि एक पति।।

सृष्टिर आदिते थाका तूमिसे केवल।

पूनू स्त्रजिबाक येवे भैला कौतूहल।।

कटाक्षे करिया प्रकृतिक सचेतन।

कोटि कोटि ब्रह्माण्ड स्त्रजाहा नारायण।।

अर्न्तयामीरुपे ताते प्रवेशिया हरि।

कराहा बिहार नानाबिध रूप धरि।।

ब्रह्मारूप धरि स्त्रजा ईतिनि भूवन।।

बिष्णूरूप धरि करा सृष्टिक पालन।

रुद्ररूप धरि करा आपूनि संहार।।

एहि महा मोक्ष लीला कौतूक तोमार ।।(दत्तबरुवा 2016:40)

'श्रीमद्भागवतम्' के षष्ठ अध्याय में वर्णन है कि दक्ष द्वारा श्री भगवान की स्तुति करने पर भगवान अधिक प्रसन्न हुए थे तथा प्रजापति दक्ष को उन्होंने दर्शन भी दिया था,-

इति स्तुतः संस्तुवतः स तस्मिन्नघमषणे ।

प्रादुरासीत् कुरुश्रेष्ठ भगवान् भक्तवत्सल: ॥(दत्तबरुवा 2016:203)

श्री भगवान को अपने समक्ष प्रकट देखकर प्रजापति दक्ष ने प्रसन्नता से नमस्कार करते हुए भूमि पर दंडवत प्रणाम किया था-

रूपं तन्महदाश्चर्यं विचक्ष्यागतसाध्वस: ।

नानाम दंडवद् भूर्मो प्रहृष्टात्मा प्रजापति: ॥(प्रभुपाद, श्रीमद्भागवतम् षष्ठ स्कंध 2018:205)

गुह चंडाल की धृष्टता के कारण जब राजा दशरथ उन्हें दंडित कर रहे थे तभी राम ने उनका शुद्ध हृदय जान पिता से उसको अभय दान स्वरूप माँग लिया था । प्रभु श्रीराम की अहैतुकी कृपा देखकर गुह चांडाल आत्मविभोर हो उठा । उसने करुणावतार मर्यादपुरुषोत्तम राम की स्तुति की । उस चांडाल ने राम की महिमा जानकर वंदना करते हुए कहा कि कहाँ वह नीच जाति का चांडाल था, अब प्रभु ने उसे अपना मित्र बना कर उस पर अहैतुकी कृपा की है । राम ही परमेश्वर हैं । ब्रह्मा भी जिनकी महिमा नहीं जानते और वेद भी जिनके बारे में बता कर अंत नहीं कर पाते और जिनका नाम लेने मात्र से पापियों का उद्धार हो जाता है उसे प्रभु ने अपना परम मित्र बना हृदय से लगा लिया । अतः स्तुति करते हुए गुह चांडाल कहते हैं-

हेन शुनी गुह चांडालेर अधिपति ।

रामक बूलिल अनेक भकति करि ।।

कैर मइ हीन जाति चंडाल अधम ।

तूमि त्रिजगत गुरु ईश्वर परम ।।

ब्रह्मा हरे नजानंत याहार महिमा ।

चारि बेदे कहि यार नपारन्त सीमा ।।

अधमो उद्धारे यार नाम लैले मात्र ।

मई केने तोमार मित्रर भैलो पात्र ।।

कमने तर्किब प्रभू तोमार लीलाक ।

करा अनूग्रह केने केतिक्षणे काक ॥

नाहिके तोमात जाति आचार बिचार ।

तयूपदे शरण करोक मात्र सार ।।

एतेके तोमार तात करुणा मिलय ।

येई सेईमते येन अमृत पिवय ।।

एतेके अजरामर होवे सिटो जन ।

लैलो आजी मात्र मई तोमत शरण ।।(दत्तबरुवा 2016:53)

राम, सीता, लक्ष्मण तीनों ने जब दंडकारण्य में प्रवेश किया तभी राम के हाथों में धनुष लिए सुन्दर रूप को देख ऋषिगण मिलकर स्वागत हेतु स्तुति करने लगे । वेद-पाठ का उच्चारण कर स्वस्तिवाचन तथा स्तुति करते हुए ऋषि वंदना कर कहने लगे कि धर्म रक्षा हेतु राम अवतरित हुए हैं । इनके दर्शनों का सौभाग्य ऋषियों को मिला, वे धन्य हो गए । जिसका नाम स्मरण मात्र से पापियों का उद्धार हो जाता है वही मनुष्य रूप मे लीला करने आए हैं । अतः ऋषि गण राम की वंदना कर याचना करते हैं कि प्रभु श्रीराम के चरणों में उनकी भक्ति अविचल रहे-

हाते धनूशर धरि लक्ष्मण श्रीराम ।

आश्रमेक पाईला रबिमण्डल उपाम ।।

भैला महातृपिति आशेष स्तुतिभावे ।

आकर्ण शवद ऋषिसब गलरावे ।।

रामक देखिया सबे परम हरिषे ।

सहस्त्र संख्यात बेढिलेक चतुर्दिशे ॥

बेदपाठ उच्चरिया आशंसार जाक ।

सबे हंते संबोधी बुलिला स्तुतिबाक ।।

याहार बिनोद ईटो सकले संसार ।

तेंते धर्मरक्षा हेतू भैला अवतार ।।

अत्यंत पापीयों तरे याहाक सूमरि ।

हेन ईश्वरक देखिलोहो नेत्र भरि ।।

जगत कारण तूमि बिधातारो बिधि ।

तयू दरशने तपस्यारो भैल सिद्धि ।।

जन्मरो साफल भैल तयू दरशने ।

रहोक भकति प्रभू तोमर चरणे ।।(दत्तबरुवा 2016:182)

अरण्यकांड में खर-दूषण राक्षसों के वध के पश्चात आकाश से सिद्धगण आदि तथा देवतागण भी उतर आएं । सिद्धगण भूमि पर उतर वेद-पाठ करके भगवान की वंदना करने लगे । ब्रह्मा ने पुनः सिर झुकाकर प्रणाम किया तथा चारों मुखों से राम की स्तुति, उनकी वंदना करने लगे-

रामर हातत येवे राक्षस परिल ।

सूरासूर नरे जयराम जोकारिल ।

देवतासकले पूष्पवृष्टि करिलंत ।

ब्रह्म ऋषिगणे शुद्ध दृष्टि चाहिलन्त ।।

आकाशर सिद्धगण भूमित नामिल ।

बेद पढ़ि राघवक आशीर्बाद दिल ।।

आकाशत थाकि ब्रह्मा अवनत हुई ।

करीबे लागिला पाचे तूति चारि मूई ।।

नमो नमो राम करो चारणे प्रणति ।

तूमि नारायण सदानन्द लक्ष्मीपति ।

याक स्मरि तरे महा महापापीगण ।

प्रणामो देवरो देव प्रभू निरंजन ।।

तूमि ब्रह्मा तूमि बिष्णु तूमि त्रिपुरारि ।

जगत कारण नमो तूमिसे मूरारि ।

तूमि सञ्चा सबे मिछा जगत यतेक ।

संसारत नाहिके तोमार बेतिरेक ।।(दत्तबरुवा 2016:202)

रावण विजय के पश्चात सीता को अग्नि परीक्षा के समय ब्रह्मा स्वयं पुनः आकार राम की स्तुति, वंदना आदि करते हुए कहते हैं कि राम ही स्वयं नारायण महाहरि हैं । कविराज माधव कंदली ने इसी प्रसंग को कुछ इन शब्दों में लिखा है-

अमोघ स्तुतिक करि ब्रहादेवे बुलिलन्त तुमि नारायण महा हरि ।

उत्पत्ति मरण हन्ते असुरक संहरण शंख चक्र गदा पद्म धरि ।।(दत्तबरुवा 2016:451)

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि सप्तकाण्ड रामायण में वंदन-भक्ति विधि की अनेकों बार चर्चा हुई है ।

### 4.3.7 दास्य

'भक्तिरसामृतसिंधु' जैसे महान भक्ति विश्लेषणात्मक ग्रंथ में श्रील रूप गोस्वामी ने कहा है कि भगवान की किसी-न-किसी सेवा में निरंतर संलग्न रहना ही दास्य भक्ति या सेवकाई है । 'सप्तकाण्ड रामायण' के सभी

पात्र किसी-न-किसी रूप से भगवान की दास्य भक्ति या सेवकाई कर रहे हैं। यह भक्ति सबसे महान है। एक सच्चा भक्त सदा अपने को भगवान का ही नहीं बल्कि भगवान के दास के दास की भी दासत्व करने में अपना सौभाग्य समझता है। चैतन्य महाप्रभु ने कहा था की जीव का असली स्वरूप ही है कि वह कृष्ण का नित्य दास है।

भक्ति एक ऐसा तत्व है जिस के बल पर एक भक्त भगवान को ही जीत लेता है। बलि महाराज ने भगवान के चरण को मस्तक पर क्या धारण किया भगवान उनके गृह के दास बन कर पहरा देने लगे। हनुमान अंगद तथा समस्त वानर सेना ने स्वयं को भगवान का दास तथा एक तुच्छ सेवक मानकर उनकी सेवा की। भगवान ने उनको हृदय से लगाकर उनकी सराहना की। 'श्रीमद्भागवतम्' के सप्तम अध्याय में दास्य भक्ति की व्याख्या करते हुए कहा गया है "अपने आप को श्री भगवान का चिर दास मानना ही दास्यम  भक्ति है।"(प्रभुपाद, श्रीमद्भागवतम् सप्तम स्कंध 2018:206)

'सप्तकाण्ड रामायण' में ऐसे अनेकों प्रसंग है जिसमें गुह, सीता, भरत, लक्ष्मण, हनुमान आदि सभी स्वयं को भगवान राम का दास बताते हैं। स्वयं कविराज ने अपने को भगवान राम का दास, बताते हुए अनेकों पदों की रचना की है। जब राम गुह की अपने पिता राजा दशरथ से रक्षा करते हैं तथा गुह को आपना मित्र बनाकर हृदय से लगा लेते हैं तभी गुह भगवान श्रीराम की भक्ति अपने हृदय में बसा कर अपने को भगवान का दास बना लेते हैं। गुह राम से निवेदन करते हुए कहते हैं कि वे नीच जाती के हैं, राम तीनों लोकों के पालन हारी भगवान हैं। ब्रह्मा तथा वेद भी राम का पार नहीं पा सकते और उन्होंने उसे अपनाया। राम से पुनः कृपा करने की तुम्हारे याचना करते हुए कहते हैं कि वे सदा चरणों का दास बने रहें। वे गुह को अपना दास ही समझें। फिर प्रेम वश गुह पीछे की ओर ताकते चले गये-

माथात माखिल चरणर धूलि आनि ।

पूनरपि कृतांजलि बुलिलंत बाणी ।।

तोमार चरणे रति नूगूचोक मोर ।

याक दरशने पाप एराईलो दुर्घोर ।।

धरिबाहा आमाक दासर बूलि दास ।

जन्मे जन्मे एहि चरणत हौक आश ।।

एहि बूलि कतोदूर गैला पातभरि ।

पूनरपि प्रणामिला दंडवते परि ।।

एहि राम पादपद्म दूइ मने धरि रैल ।

सैन्यसमे गुह निजस्थाने चलि गैल ।।(दत्तबरुवा 2016:54)

राम वन गमन के पश्चात जब भरत चतुरंगीनी सेना सजाकर वन से राम को अयोध्या ले जाने निकले । तभी भरत का मनोरथ न जान गुह को लगा कि कहीं भरत राम की हत्या कर निष्कंटक राज्य भोग करने हेतु तो नहीं आ रहे हैं । राम-भक्त गुह क्रोध में कहते हैं कि वे राम के रक्षार्थ भरत से युद्ध करके समस्त सेना का गरुण की भाँति संहार करेंगे । इसे छोड़ देने पर धिक्कार है । वे अपने आपे को राघव का भृत्य अथार्त दास बताकर सेना को सजाने की अज्ञा देते हैं । अतः यहाँ भी दास्य भक्ति भाव प्रकट होता है-

राज्यभार लैया बनबास दिया

तथापितो क्षमा नाई ।

सबाके हानिया मारिब सेन्थरे

एराईया आजि नयाय ।।

मोर प्रभू राम आछे बनमाजे

तेवे मोर महाभाग ।

धिक धिक मोर जीवन निष्फल

मोहोर ईटो अयोग ।।

हृदयत यत आछे गुल गुलि

भरतत सबे सारो ।

हस्ती घोंरा यत पदाति समस्त

मुंडे मुंडे हानि मारो ।।

रामेसे मोहोर निज अधिकारी

मई भृत्य राघवर ।

यत सेना बल चतुरंग दल

सजायो मोर सत्वर ।।(दत्तबरुवा 2016:162)

यही सेवा भाव देखकर भरत स्वयं गुह की सराहना करते हुए कहते हैं कि गुह ही राम के सच्चे सेवक अथार्त दास हैं-

भरते बोले भृत्य तईसे रामर ।।(दत्तबरुवा 2016:166)

भरत की भक्ति भावना भी दास्य भाव से ओत-प्रोत है । वे भी अपने को भगवान का एक अदना-सा भृत्य, एक साधारण दास समझकर राम की सेवा में ही निमग्न रहते हैं । जब राजा दशरथ वैकुंठ प्रयाण कर जाते हैं तब समस्त मंत्री गण भरत को राजा बनाने का आग्रह करते हैं । भरत यह सुनकर बड़ा ही आहत अनुभव करते हैं । वे ऋषि, गुरु तथा मंत्रियों से कहते हैं कि उन्हें राज्य नहीं चाहिए ।

लक्ष्मण भी भगवान की निष्काम भक्ति करते हैं । उनकी कामना तो केवल भगवान की दासता करना ही है । वे अपने को भगवान का नित्य दास मानकर उनके हर कार्य में उनकी सेवा भाव से संग रहते हैं । जब ऋषि विश्वामित्र ताड़का-सुबाहु आदि राक्षस वध हेतु राम को अपने संग ले जाने लगे तभी राम को अपने से दूर जाता देख लक्ष्मण भी विचलित हो उठे । उनका मन अशांत हो रो पड़ा । वे तत्क्षण भगवान राम के श्री चरणों में गिरकर याचना और वंदना करने लगे कि राम जहाँ भी जाएँ उन्हें भी अपने संग ले जाएँ । वे राम के बिना एक पल भी नहीं रह सकते । अतः राम के चरण पकड़ उनसे निवेदन करते हैं कि वे उनको भी संग ले लें तथा लक्ष्मण राम से कहते हैं कि वे दास बनकर राम की सदा सेवा करेंगे-

राघवक पाया मूनि भैलन्त संतोष ।

पूष्प बरषिला देवे करि जयघोष ।।

सेहि बेला योरहाते उठिला लक्ष्मण ।

रामक बूलिला करि चरणे बन्दन ।।(दत्तबरुवा 2016:59)

अतः दास्य भावना सप्तकाण्ड रामायण के प्रत्येक पात्र में निहित है । सभी स्वयं को भगवान का दास रूप में समर्पित किए हुए हैं । दास्य-भावना भक्ति की अत्यंत सहज तथा उत्तम विधि है । सभी भक्त अपने को प्रायः भगवान का नित्य दास मान अनेकों प्रकार से उनकी सेवा करते हैं ।

### 4.3.8 सख्य

सबसे विरल नवधा-भक्ति है 'सख्य-भक्ति' । अपने आराध्य को मित्र रूप मे पाकर या मानकर उनकी भक्ति या सेवा करना ही सख्य भक्ति विधि कहलाती है । श्री जयदयाल गोयंदका लिखते हैं कि 'केवल सख्य भक्ति से भी मनुष्य के दुख और दोषों का शमन होकर भगवान की प्राप्ति और भगवान में प्रेम हो जाता है।(गोयंदका 2019:45)

सुदामा और कृष्ण की मित्रता तथा सुदामा की भक्ति भावना सख्य भक्ति के अंतर्गत अटूट है । सुदामा की सख्य भक्ति तो संसार में अद्वितीय तथा पूजनीय है । भगवान कृष्ण तो सुदामा की भक्ति भावना से इतने प्रसन्न थे कि सुदामा जब प्रभु से मिलन हेतु उनकी द्वारिका नगरी पधारते हैं तब मित्र को आया हुआ देख कृष्ण स्वयं नंगे पैर दौड़कर उसे अपने साथ महल के सिंहासन पर विराजित कर उनके चरणों को अपने कमल सदृश नयनों के आँसुओं से धोकर उनका सम्मान करते हैं । नरोत्तम दास द्वारा विरचित प्रख्यात कविता 'सुदामाचरित' में उन्होंने कृष्ण का सुदामा के प्रति व्यवहार का जैसा वर्णन किया है वैसा संसार में अद्वितीय है-

ऐसे बेहाल बेवाइन सों पग, कंटक-जाल लगे पुनि जोये ।

हाय ! महादुख पायो सखा तुम, आये इतै न किते दिन खोये ।।

देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोये ।

पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सौं पग धोये ।।(नरोत्तमदास :67)

यही हाल अर्जुन का भी है । अर्जुन ने भगवान की भक्ति सख्य भाव में की थी और भगवान ने अर्जुन को जगत् में सर्वोच्च बनाया । उन्हें धर्म का ज्ञान, गीता का सर्वोच्च ज्ञान दिया । अर्जुन के वंश के रक्षार्थ भगवान ने उत्तरा के गर्भ में भी परीक्षित की रक्षा की । अतः सख्य भाव भगवान की प्राप्ति की, उसकी भक्ति की एक अन्यतम विधि है । अर्जुन को परम गुह्य ज्ञान देने हेतु उसे भगवान स्वयं सदपात्र जान कहते हैं कि अर्जुन कृष्ण का अत्यंत प्रिय मित्र है, अतएवं वे अर्जुन को अपना परम आदेश, जो सर्वाधिक गुह्य ज्ञान है, बता देते हैं,-

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु में परमं वचः ।

इष्टो सि मे दृढ़मिति ततो वक्ष्यामि ते हितम ।।(प्रभुपाद, श्रीमद्भावतगीता यथारूप 2011:552)

राम भी किसी से भेदवाभ नहीं करते । जिनका हृदय शुद्ध तथा भाव निर्मल होता है उन्हें अपना दास नहीं, अपना मित्र मानकर गले से लगा लेते हैं । रामावतार में यह पूर्णतः सिद्ध हो चुका था । गुह एक चांडाल जाति का युवक था । दशरथ द्वारा प्राणदंड दिए जाने पर भी राम ने गुह को पवित्र जानकार उसके प्राणों की रक्षा की । उसे अपना मित्र मानकर अपने हृदय से लगा लिया । गुह चांडाल को राम ने वस्त्र, आभूषण तथा कई गाँव का राजस्व दे अपना मित्र बनाकर उसे हृदय से लगा लिया । अतः राम के इस महान चरित्र को देखकर गुह भाव विह्वल हो उठते हैं तथा कहते हैं कि तीनों लोकों के एकाधिपति परमेश्वर स्वयं राम ने उनपर कृपा की है-

पाइलन्त गुहक रामे पितृत मागिया ।

करिला आश्वास बस्त्र अलंकार दिया ।।

अनेक शासन रामे दिला ग्राम देश ।

निर्भय बचने तांक बूलिला अशेष ।।

आजि धरि गुह तूमि भैला मोर मिता ।

थाकियोक सूखे किछू नकरिबा चिन्ता ।।

हेन शुनि गुह चंडालर अधिपति ।

रामक बूलिल अनेक भकति करि ।।

कैर मई हीन जाति चंडाल अधम ।

तूमि त्रिजगत गुरु ईश्वर परम ।।

ब्रह्मा हरे न जानन्त याहार महिमा ।

चारि बेदे कहि यार नपारन्त सीमा ।।

अधमो  उद्धारे यार नाम लैले मात्र ।

मई केने तोमार मित्रर भैलो पात्र ।। (दत्तबरुवा 2016:53)

जब राम-सीता और लक्ष्मण वनवास गये तभी रास्ते में शृंगवेरपुर में गुह के निवास स्थान पर रुके । अपने आराध्य राम के आगमन का समाचार सुनकर गुह आनंद विभोर होकर स्वागत हेतु पान, तांबुल आदि विविध पदार्थों का उपहार लेकर राम के स्वागत हेतु पहुँचे । राम के दर्शन कर गुह ने दूर से ही साक्षात दंडवत प्रणाम किया । अपने मित्र गुह की भक्ति तथा सत्कार देख राम बहुत प्रसन्न होकर गुह से मिले । गुह को हृदय

लगाकर गले मिले तथा उसका मस्तक चूमकर उसकी सराहना की। गुह ने भी अपने स्वामी, अपने इष्टदेव, अपने आराध्य को मित्र रूप में पाकर अपने भाग्य को सराहा। उस सख्य भक्ति प्रसंग का सुन्दर उल्लेख द्रष्टव्य है-

कर्पूर ताम्बूल यत बिबिध भक्षण।

रामर आगत करिलेक उपसन ॥

आईस आईस गुह रामे बूलि रामे दिला बार।

सन्नित चापिला गैया बिनय स्वभाव ।।

दूई बाहु मेलि रामे सावटि धरिला।

ग्रीवत धरिया माथे चूम्बन करिला ।।

किनों सुभ दिन आजि देखिलोहो तोक।

एराइलोहो क्षणेकते हृदयर शोक ।।(दत्तबरुवा 2016:137)

राम और गुह की मित्रता तथा राम के चरणों में गुह की भक्ति जगत प्रसिद्ध है। जब भरत राम को आयोध्या लौटा लाने वन को चले तभी मंत्री भरत को राम के मित्र गुह की महान् भक्ति तथा मित्रता की बातें बताते हैं। मंत्री भरत से कहते हैं कि उन्हें गुह का आदर करना चाहिए-

रामर परम एहो सखा महाहित।

सतकार करिबाक तोमार उचित ।।

देखिलोहो रामे येन आश्वास करिल।

आलिंगि धरिया आन माथे चूमा दिल ।।(दत्तबरुवा 2016:163)

राम ने जिससे भी मित्रता की उसका उद्धार कर दिया, अपने मित्र धर्म का भी निर्वाह किया तथा मित्र की भक्ति का उचित पारमाथिर्क फल भी दिया । सुग्रीव से मित्रता करने पर उसे किष्किंध्या का निष्कंटक राज्य तथा अपने चरणों में अगाध भक्ति का सुख दिया । रामचन्द्र को मित्र रूप में पाकर सुग्रीव बहुत हर्षित होकर अपने भाग्य की सराहना करते हैं । अग्नि को साक्षी मानकर दोनों प्रदक्षिणा कर एक दूसरे के सुख-दुख में साक्षी होने का वचन लेते हैं । सुग्रीव सीता की खोज कर राम से मिलाने का शपथ लेते हैं । सुग्रीव की भक्ति तथा राम के प्रति मित्रता का भाव कविराज कंदली कुछ इन शब्दों में वर्णन करते हैं । वे कहते हैं कि सुग्रीव ने मनुष्य रूप साक्षात नारायण को अनायास ही प्राप्त कर लिया । सुग्रीव को सिद्धि मिल गयी । उसकी दुर्गति मिट गयी-

बायूसूते आमार ईष्टक साधिलन्त ।

रामक आनिया मोक तूष्ट कराइलन्त ।।

मनूष्य स्वरुपे नारायण अवतार ।

अल्प साध्ये पाईलो भैल कल्याण आमार ।।

मोर सिद्धि भैल सबे गुचिल दुर्गति ।

दशम एराया एकादश बृहस्पति ।।

आगते अगनि ज्वालि बंधाइलन्त मित्र ।

सत्य करिलंत दूयो अनेक बिचित्र ।।

अगनिक प्रदक्षिण दूयो करिलंत ।

आउरे आउरे चांत कौतूकर नाहि अन्त ।

चाहन्ते चाहन्ते चक्षू नभाषय आर ।

मित्रता करन्ते देखि आनन्द अपार ।।

अनेक सूकृत करि बंधाइलंत मित्र ।

सत्य करिलंत दूयो अनेक बिचित्र ।।(दत्तबरुवा 2016:232)

सुग्रीव जानते थे कि जो राम मनुष्य रूप में उनके जैसा एक साधारण निराश्रित वानर से मित्रता कर रहा है वह कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं । वे जानते हैं कि राम परमेश्वर हैं । वे दुर्गति को तारने वाले हैं । अतः इसी हेतु सुग्रीव ने राम चरणों की भक्ति की शरण ली-

एवे तयू पावे प्रभू पशिलो शरण ।

तोमार भकति देव दूर्गति तारण ।(दत्तबरुवा 2016:237)

यही कारण है कि सुग्रीव की भक्ति भावना जो कि सख्य भक्ति है उसकी सराहना की थी । माधव कंदली सुग्रीव की सख्य भक्ति विधि के सुन्दर दृष्टांत को कुछ इन शब्दों में लिखर कहते हैं कि सभी को राम का चरित्र सुनना चाहिए । इस कलिकाल में समस्त पाप का नाश कर अमृत सदृश भक्ति का वरदान ही राम की भक्ति से संभव हो जाता है । यह राम के चरणों मे श्रद्धा तथा भक्ति ही है जो एक साधारण से वानर को भी मित्र पद प्राप्त हुआ, समस्त संसार में यश लाभ हुआ । भगवान राम इतने कृपालु हैं कि नाम लेने मात्र से ही अपना-पराया त्याग कर सबको अपना लेते हैं अतः राम के चरणों की शरण लेनी चाहिए-

शुना समाजिक जन रामर चरित ।

कलिमल बिनाशन परम अमृत ।।

देखियो रामर केने लीला बिपरीत ।

बनर बानर समे  करिला सखित्व ।।

शरण मात्रके प्रभू एको नबाचंत ।

हेनसे कृपालू देव राम भगवन्त ।।

जानिया रामर पावे पशियो शरण ।

दूल्र्भ मनूष्य तनू परे केतिक्षण ।।

निसीम जनम शत कोटि र अंतरे ।

कृत भाग्यवशे जीवे नर देहा धरे ।।(दत्तबरुवा 2016:241)

भगवान् इतने कृपामय हैं कि अपने भक्तों के उद्धार के लिए, भक्तों के द्रोही के लिए कुछ भी कर देते हैं । यही कारण है कि बालि की पत्नी तारा ने बालि को पहले ही सावधान करते हुए कहा था कि भगवान नारायण रूपी राम स्वयं आज सुग्रीव के मित्र बनकर उसके साथ खड़े हैं । वे भक्त हेतु अन्याय भी कर जाते हैं । राम भक्तवत्सल गुणोंवाले दयालु भगवान हैं । सुग्रीव निरंतर उनकी भक्ति करता हैं । अतः तारा बालि को रोकती हैं-

तथापि बालीक तारा बूजाई बूलिलंत ।

भकतर पदे रामे अन्याय करन्त ।।

भकत बत्सल गुण एतेके रामर ।

सूग्रीव भकति तांते करे निरन्तर ।।(दत्तबरुवा 2016:245)

राम ने केवल गुह, सुग्रीव आदि मनुष्यों तथा वानरों से ही मित्रता नहीं की । बल्कि उन्होंने तो शरण में आए राक्षसों का भी उद्धार  कर दिया । जब विभीषण रावण दवारा अपमानित होकर लंका से निष्काषित कर दिए गए । तब वह राम की शरण ग्रहण करते हैं । राम भी उनकी भक्ति भावना को देख तुरंत ही उसपर कृपा करते हैं । उन्होंने विभीषण का अभिषेक कर तत्तक्षण उसे लंका का राजा बना दिया । इतना ही नहीं लंका जीतने के पश्चात सम्पूर्ण लंका राज्य विभीषण को दे दिया । राम जब विभीषण से मिले तब उसे भी गले लगाकर हृदय से हृदय मिला मित्रता की-

देखि बिभीषणे करिलन्त योरहात ।

प्रणामि बोलन्त प्रभू शरण तोमात ।।

लंकात एरिया आन सबे परिबार ।

आन गति नाइ बिने चरण तोमार ।।

हेन बाणी येवे बिभीषण बुलिलंत ।

गले धरि कोले करि सावटिं लैलन्त ।।

श्रीराम बोलन्त लखाई मोर बोल जान ।

अति शीघ्र करि सागरर जल आन ।।

शुभदिन सुभ तिथि यावे आतिरेक ।

करो बिभीषणक लंकाते अभिषेक ।।(दत्तबरुवा 2016:328)

राम स्वयं परमेश्वर भगवान हैं। उस बाली को जिसने रावण तथा सुग्रीव को भी परास्त कर दिया था, उसे एक ही बाण से उन्होंने यमलोक भेज दिया, उस राम को भला सुग्रीव और विभीषण की मित्रता से क्या सहायता ? वे चाहते तो अकेले ही रावण का सेना सहित संहार देते। परंतु राम ने एक महान आदर्श तथा भक्ति का एक प्रबल उदाहरण सुग्रीव तथा विभीषण के रूप में जगत् को दिया। यह सिखाया कि राम की भक्ति से किस प्रकार पददलित सुग्रीव किष्किंध्या के राजा बन गए तथा विभीषण लंका के संम्राट। फिर भी युद्ध जीतने के पश्चात राम ने मित्र विभीषण की अत्यंत हृदय से सुन्दर शब्दों में सराहना की। राम केहते हैं कि मित्र के साथ के कारण ही आज राम दुर्गति से पार पा सके हैं। विभीषण को तुरंत लंका का राज्य सौंप कर अपना वचन पूरा करते हैं-

आनंद करन्त राम कार्य्यक संकलि।

सुग्रीव साहिते थाकिलन्त गलागलि।।

साथर्क मोहोर मित्र अति साधरन।

याहार प्रसादे भैलो दूर्गति निस्तार।।

एकेखानि आछे मोर मनोरथ काज।

प्रतिज्ञा साफलि बिभीषणे  देओं राज।।

उपकारी मित्र मोर महाबूद्धि पात्र।

आमि ये निमित्त तेहे जीनिलेक मात्र।।

ईहान प्रसादे दुर्गतित भैलो पार।

इंद्रजित परिला भूमिर महाभार ।।

रावण मारिलो सिद्धि भैला मोर काज ।

बिभीषण मित्र तूमि लैयो लंकाराज ।।(दत्तबरुवा 2016:444)

अतः यहाँ हमें इन सारे प्रसंगों में सख्य-भक्ति की सुन्दर विधि के दर्शन होते हैं ।

### 4.3.9 आत्म निवेदन

जिस भक्त ने पूर्णतया अपने आराध्य परमेश्वर भगवान की शरणागती ग्रहण कर ली तथा अपने समस्त कार्यों को भी उसी आराध्य परमेश्वर के श्री चरणों में अर्पित कर के छोड़ दिया उसी अवस्था या भक्ति विधि को आत्मसमर्पण विधि भक्ति कहते हैं । इस समपर्ण के फलस्वरूप भक्त की कोई भी इच्छा शेष नहीं रहती, उसे केवल अपने आराध्य की सेवा या भक्ति में ही सबकुछ दिखने लगता है । आत्मनिवेदन विधि भक्ति नौ भक्ति विधियों में सबसे विरल भक्ति विधि है । डॉ. पी. जयरामन 'भक्ति के आयाम' में लिखते हैं "वास्तव में नवधा भक्ति भक्त की चेतना को विकसित करने वाले सोपानों का विधान है जिसमें आत्मनिवेदन सोपान में पहुँचने पर भक्त भगवत्सान्निध्य का अधिकारी हो जाता है ।"(जयरामन 2003:412)

'सप्तकाण्ड रामायण' में अगर हम देखें तो यहाँ का प्रत्येक रामभक्त पात्र आत्मनिवेदन भक्ति विधि का अधिकारी है । चाहे सीता हों, मंत्री सुमंत्र हों, प्रजा हो, लक्ष्मण, भरत, शत्रुध्न या गुह चंडाल हों, समस्त वानर, सुग्रीव, अंगद आदि तथा विराध राक्षस ही क्यों न हों सभी किसी न किसी प्रकार से आत्मनिवेदन अथार्त सबकुछ राम के चरणों में त्यागकर केवल राम की शरणागति में ही अपनी परम गति समझते हैं । पुत्र के वियोग में

दशरथ अपने सम्पूर्ण सुखों का त्याग कर प्राणों का भी उत्सर्ग कर देते हैं। लक्ष्मण सम्पूर्ण राज सुख त्याग प्रभु के संग वनवास का दुख भोगने चले जाते हैं। सीता पति श्रीराम के चरणों के लिए अनेकों कष्ट उठती हैं। राम वियोग से व्याकुल सम्पूर्ण प्रजा सुख से जीना छोड़ देती है। भरत भ्राता राम के निमित्त अयोध्या का राज्य प्राप्त कर के भी एक वनवासी भक्त की भाँति अपना जीवन व्यतित कर देते हैं। मंत्री सुमंत्र राम के वियोग से व्याकुल हो महल लौटने से इनकार कर देते हैं। सुग्रीव तथा समस्त वानर सेना तथा हनुमान स्वामी राम के हितार्थ अपने प्राणों को भी निसर्ग करने हेतु भीषण कर्म करते हैं। अतः आत्मनिवेदन भक्ति भले ही समस्त नवविधा भक्ति विधियों में दुर्लभ तथा विरल होते हुए भी 'सप्तकाण्ड रामायण' के रामभक्त पात्रों में सहज रूप में व्याप्त है। इस भक्ति विधि के कुछ-कुछ सुन्दर दृष्टांत द्रष्टव्य हैं।

जब लक्ष्मण ने राम को वन जाते हुए देखा, तभी उन्हें यह देखकर परम दुख हुआ कि उनके एक मात्र आराध्य प्रभु श्री राम उन्हें छोड़ कर वन को चले जा रहे हैं। राम को जाता देख लक्ष्मण को लगा कि कोई उनके प्राण पखेरू को खिंच कर उनके शरीर से अलग कर रहा है। अतः वे राम के चरणों में गिरकर उनसे निवेदन करने लगें कि वे उन्हें भी साथ ले चलें। अगर लक्ष्मण को साथ लेकर नहीं गएं तो वे कटार मारकर अपने प्राणों को ही तज देंगे। राम ने बहुत समझाया कि राज्य में रहों, माता-पिता की देखभाल करो, महल में सुख मिलेगा, वन में कष्ट। परंतु राम की भक्ति के बिना ये सारे सुख लक्ष्मण को विफल लगे। उन्होंने सभी सुखों का त्याग कर केवल भक्ति चुना।

लक्ष्मण की भक्ति केवल वन जाने तक ही सीमित नहीं है। वे तो अपनी हर साँस में राम को बसाये हुए हैं। रावण पक्ष के संघ युद्ध करते हुए जब दो बार लक्ष्मण को शक्ति लग जाती है तब लक्ष्मण की भक्ति भावना के प्रति स्नेह से विह्वल होकर राम व्याकुल हो उठते हैं। वे प्राण भाई लक्ष्मण का वियोग सहन नहीं कर पाते। हनुमान को आदेश देकर जड़ीबूटी मँगवाते हैं तथा लक्ष्मण को पुनः जीवित कर देते हैं।

उत्तरकाण्ड में जब लक्ष्मण का दुर्वासा मुनि को दिए वचन के कारण त्याग करना पड़ा तब राम वियोग में लक्ष्मण ने भी प्राणों का त्याग कर दिया। जब राम लक्ष्मण के मृत शरीर को देखते हैं तब वे भाव विह्वल हो उठते हैं। यह प्रसंग अत्यंत ही हृदय विदारक होने पर भी लक्ष्मण की भक्ति की आत्मनिवेदन-भावना का एक महान उदाहरण प्रस्तुत करता हैं-

उठियो लखाइ प्राण फूटि याय

तोरेसे दारुण शोके।

किनो अपराध बान्धव करिलों

किय नमातस मोके।।

दिव्य शय्या एरि निर्य्याणत परि

कतनो पार घूमटि।(जयरामन 2003:412)

राम वन गमन के समय राम का वियोग न सह पाने के कारण प्रजा ने भी सम्पूर्ण रूप से अपना सारा सुख त्याग कर राम की सेवा में उनके संग जाने का निश्चय किय। राम के प्रति प्रजा की आत्मनिवेदन की भावना अत्यंत ही कारुणीक है। प्रजा राम को जाता देख प्राणों के जाने के समान समझकर राघव के पीछे-पीछे लग गए-

अयोध्या तेजिया राम गैला येतिक्षण।

नगरीया लोक नथाकिल एकोजन।।

निज प्राण तिनि जन बने चलि याय।

मृतक शरीरे थाकिबोहो काक चाई ।।

एहि बूलि प्रजा राघवर लाग लैला ।

याइबे कतो नपारि पथते परि रैला ।।(जयरामन 2003:135)

पुनः जब राम प्रजा को लौट जाने का आग्रह करते हैं तब प्रजा राम से कहती है कि वे भी अयोध्या चलें, नहीं तो पुत्र-परिवार को छोडकर वे भी चल चलेंगे-

प्रजा बोले राम प्रभू धर्म्म चाहियोक ।

बाहुराया मन अयोध्याक चलियोक ।।

नोहे आमि तेजिलोहो पूत्र परिबार ।

तोमार तूलत बन करिलोहो सार ।।(जयरामन 2003:135)

मनुष्य तो राम के भक्त थे ही, राक्षस विराध भी राम के प्रति विशेष श्रद्धा रखता था । उसने जानबूझकर राम को क्रोधित किया । वह जानता था कि राम परमेश्वर भगवान हैं । इनके हाथों से मृत्यु प्राप्त करने पर भी मुक्ति रूपी परम धन मिलना तथा भक्ति की इच्छा भी पूरी हो जाएगी । अतः भगवान प्रभु श्रीराम के प्रति अपने प्राणों का ही निसर्ग राक्षस विराध ने किया-

हेन शुनि बिराधर परम हरिष ।

एहेन्तेसे राम मन करि बिमरिष ।।

आन हाते मरो पाप अंत भैल ।

एहि मने गुणी खंग तोलाईबाक लैल ।।(जयरामन 2003:183)

प्रभु श्री राम के चरणों में भक्ति की आत्मनिवेदन भावना हनुमान में तो अति प्रबल रूप में व्याप्त है । जब लक्ष्मण को शक्ति लगती है तब वैध सुषेण हनुमान को राम-काज हेतु पर्वत से जड़ीबूटी लाने के लिए कहते हैं । राम काज करने हेतु प्राणों तक के उत्सर्ग की भावना से ओत-प्रोत हनुमान कहते हैं कि यदि लक्ष्मण जीवित हो जाएँ तब तो वे अपने प्राण तक भी त्याग कर सकते हैं । अपने आराध्य राम के कारण अपने प्राणों की आहुती देने की भावना रखने वाले हनुमान कुछ इस प्रकार से यहाँ कहते हैं-

सूषेण बीरक संबूधि मारुति

हरिषे दिला उत्तर ।

मोहोर प्राणक छारी दिबे यदि

जीवन्त लखाई कूमार ।।

आपून प्राणक छारी दिबो पारो

आन कार्य्य कोन शक्य ।(जयरामन 2003:426)

## 4.4 निष्कर्ष

इस प्रकार से हमने देखा कि सम्पूर्ण सप्तकाण्ड रामायण में अनेकों ऐसे प्रसंग हैं जिनमें प्राचीन कालीन नवधा भक्ति का सुन्दर उदाहरण मिल जाता हैं । नवधा भक्ति की नवों विधियाँ यहाँ बड़े ही सृजनात्मक तथा कलात्मक ढंग से उकेरे गए हैं । ये सम्पूर्ण विधियाँ मानव समाज को युगों से प्रेरित करती आ रही हैं तथा युगों-युगों तक यूं ही प्रेरित करती रहेंगी । इनकी उपयोगिता आज भी उसी प्रकार से बनी हुई है तथा भविष्य में भी

बनी रहेंगी । रामभक्ति में रमा हर पात्र यहाँ केवल राम की भक्ति के लिए ही समर्पित नहीं है, बल्कि हर भक्त एक आदर्श व्यक्तित्व का द्योतक भी है, जो समाज को एक महान् उदाहरण प्रस्तुत करता है । ये आदर्श भक्त तथा उनके हृदय में निहित भक्ति निश्चय ही समस्त संसार का कल्याण करती हैं तथा आगे भी युग-युगांतर तक इसी प्रकार सबका पथ प्रदर्शन करती रहेंगी ।